राष्ट्र विकास

हिन्दी बजनावली

लेखक :
संत जैरामदास उर्फ लहरी बाबा

॥ श्री गुरूदेव प्रसन्न ॥

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा
द्वारा लिखीत

राष्ट्र विकास

हिन्दी भजनावली

द्वितीय आवृत्ती

- प्रकाशन तिथी -

जन्म सप्ताह समारोह (२००४)

■ राष्ट्रविकास
हिन्दी भजनावली

■ प्रकाशक
श्री. लहरी आश्रम कामठा,
जि. गोंदिया

© श्री. लहरी आश्रम कामठा

■ द्वितीय आवृत्ती
प्रती- ५००

■ प्रकाशन तिथीः
जन्म सप्ताह समारोह, २००४
लहरी आश्रम, कामठा.

■ अक्षर जुळवणी
संजय तराळ
संविस कॉम्प्यूटर्स, अमरावती

■ मुद्रक
न्यु पंचशील ऑफसेट, गांधीचौक,
अमरावती.

■ पुस्तक मिलने का स्थान
लहरी आश्रम कामठा
ता.जि. गोंदिया

■ मूल्य : रूपये १५/-

- संदेश -

प्यारे भाईयो -

यह हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि, हमें मानव जन्म मिला है । संसार की संपूर्ण सृष्टि में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । क्यों ? क्या इसलिए कि वह अच्छा खाता, पीता, जीता और मौज मजा लूटता है ? या क्या इसलिए कि वह अपने आनंद और भोग की वस्तुऐं अपनी इच्छानुसार प्राप्त कर लेता है ? नही, मनुष्य को इसके लिए श्रेष्ठ नही माना गया है । जीने के लिए तो पशु, पक्षी, कीडे, मकोडे सभी जी लेते है वे भी मृत्युपर्यंत यही सब करते रहते है । उनमें भी थोडे बहुत प्रमाण में बुद्धि रहती है । किन्तु मनुष्य इसलिए सर्वश्रेष्ठ है कि उनमें विवेक है । विवेक शून्य मनुष्य के और पशु के जीवन में बहुत अधिक अंतर नही माना जा सकता ।

तब प्रश्न यह उठता है कि विवेक क्या है और उसकी प्राप्ति कैसे होती है? प्यारे मित्रों, विवेक पवित्र आत्मा से उठने वाली वह चेतना है जो सत्य, असत्य का, पाप पुण्य का भेद बताकर हमें सदैव ही सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करती है । यही चेतना आगे चलकर हमें ईश्वर की ओर ले जाती है ।

किन्तु यह सब प्रयत्न से ही संभव हो सकता है । इसके लिए सबसे पहले हमें अपने मन को निर्मल बनाना होगा । मनुष्य की सबसे बडी शक्ति उसमें निहित विवेक है और उसकी सबसे बडी कमजोरी उसका मन है । जैसे जैसे हमारा मन काम, क्रोध, लोभ, अहंकार को जीतते जाएगा वैस वैसे उसमें विवेक का संचार होने लगेगा और तब वह स्थिति आ जावेगी जहाँ मन की सारी कमजोरी दूर होकर मन स्थिर हो जाता है और तब विवेक ज्योति प्रज्वलित हो जाती है, जिसके प्रकाश में मनुष्य का सारा भ्रम दूर होकर ईश्वर के प्रति उसका विश्वास दृढ हो जाता है और तब जीवन की कठीन परिस्थिती में भी उसका मन अडिग बना रहकर वह निर्मल मन से अपने कर्म करते चला जाता है । ऐसा मनुष्य स्वयं तो सदैव आनंद पाता ही

है अपने साथ में रहने वालों को भी आनंद बाँट सकता है ।

इसके लिए यह आवश्यक है कि हम कोई भी काम करे, चाहे अपने प्रपंच का ही क्यों न हो, हमेशा उसे अपनी आत्मा की ग्वाही देकर, अपने विवेक से उसे परखते रहे । सदैव ही ऐसा कार्य करे जिससे दूसरों को कष्ट न पहुंचे बार बार मन को समझाकर उस पर संयम रखें । जब हम स्वयं सुधर सकेंगे तभी समाज को सुधार सकेंगे, तभी हमारा समाज और देश उन्नती कर सकेगा । खाली बैठकर केवल बड़ी बड़ी बाते करने से कुछ नही होगा । मित्रों, इन बातोंपर ध्यान दो और समझो तभी भलाई हो सकती है वरना नही ।

– जैरामदास

■ ■ ■

- वंदना -

(चाल - तेरे द्वार खडा एक जोगी)

मेरा ताल है सबसे निराला -२
मैं ही गांवूं मै ही बोलू, ऐसा हूं अलबेला ॥धृ॥

ना किसीसे दोस्ती मेरी, ना हूँ मैं किसीका बैरी
अपने में मतवाला ऽऽ २
नहीं किसीसे लेना देना, फुकट नहीं किसी से खाना
छूटा माया झमेला ऽऽ २
अपने बलपर करूं गुजारा, पीकर ब्रम्हप्याला ॥१॥

समाधान पावू सत्संग में भूल जावू उनके गुण में
सुध ना रहे इस तनकी ऽऽ २
ब्रम्ह जगतकी देखूं झाँकी, सारी दुनिया लगे फीकी
लगी लगन हरिहर की ऽऽ २
मैं ही गुरू मै ही चेला, ऐसा हूं मैं भोला ॥२॥

मेरे ताल को कोई न जाने, जाने तो टूटे आना-जाना
मोक्ष का मिले ठिकाना ऽऽ २
कर्ता धर्ता वोही बना, सभी में है वो परिपूर्ण
हो गया वो मस्ताना ऽऽ २
पृथ्वी को वो गेंद बनाकर, खेले खेल निराला ॥३॥

आत्मतत्वको मैने पाया, विश्वको घर बनाया
तिर्थ मनमे किया ऽऽ २
सब ठिकाने एकही पाया, कल्प विकल्प सब मिटाया
नैनों में बसगया ऽऽ २
जैरामदास कहे गुरूकृपा, निर्गुण खेल खेला ॥४॥

प. पू. संत जैरामदास उर्फ लहरीबाबा

- भजन सूची -

भजन क्र.	पृष्ठ क्र.	भजन क्र.	पृष्ठ क्र.
१. एक जीन सहारा है	१	२८.धन पुत्र का गर्व जिसे हो	१९
२. ज्ञानी रे ज्ञानी तेरा ढंग	२	२९.कर्म भूमि में आये तो	१९
३. ये गरीबों की जिंदगी है	२	३०.हरी के भजन बिना किसी ने	२०
४. तेरी चालाकी कब तक चलेगी	३	३१.जो जाने दिल की बात	२१
५. सच झूठ का साक्षी है वो	४	३२.बापू के वचनों को निभाने	२१
६. जाओ रे तुम हरि दर्शन को जावो	४	३३.दुनिया देखो लन्दी फंदी	२२
७. पर जींवो पर सदा प्रेम रखना	५	३४.तेरी नेकी बदी	२३
८. घर आयो आज जैराम पाहुना	५	३५.मै जोगी जोगन	२३
९. सुन रे कन्हैया राधा के रमैया	६	३६.अमर हो गया जो नर	२४
१०.प्रीत लगी तेरी गजानन साई	७	३७.हमारे बोल की किंमत	२४
११.किसी जीवों के काम मे रे	८	३८.तुम हमसे करते गद्दारी	२५
१२.कहना तो आसान है	८	३९.अब काहे को बकवास	२५
१३.देश मेरा हिंदुस्थान	९	४०.दो दिन की जिंदगी फिर	२६
१४.देश धर्म के काम जो आवे	९	४१.ऊंचे भाव को दिल में रखकर	२७
१५.छोड़ गये है बापूजी	१०	४२.तेरी रहेगी जग में शान	२८
१६.कर्म तेरे जब उज्वल होंगे	११	४३.हम आये तेरे दर पे	२९
१७.इंसाफ का मंदिर है	११	४४.करे भगवान पूरा उसका	२९
१८.मेरे दिल में लगी है	१२	४५.जो बुरे राहों पर चलता है	३०
१९.ये भारत भू का छोरा	१३	४६.ओ ऽऽ दुनिया के बनाने वाले	३१
२०.आज छोडी है मानवने	१४	४७.अरे बुरी व्यसन में फँसी है	३२
२१.इन स्वार्थी लोगो से हुआ	१४	४८.इस देशकी जिम्मेदारी	३३
२२.प्रेमी मेरा वो सच्चा है	१५	४९.समाज सुखी देश सुखी	३३
२३.जिसको जिस पर है श्रद्धा	१६	५०.ये खिसकती उमर तेरी	३४
२४.पाया रे मैने राम रतन का	१६	५१.मेरे भारत के किसान	३५
२५.मुझे ध्यान लगा	१७	५२.सच्चे सेवक कहलाते	३५
२६.आज जग में जहाँ वहाँ	१७	५३.बिगड़े कर्म के वो ना चले	३७
२७.स्वाभिमान के बल पर	१८	५४.ग्राम येही मंदिर मेरा	३८

५५.मेरा प्यार किसान मेरा ३८
५६.गरीबों के अश्रु से भर रही ३९
५७.जीसका पद उसको ही सोहे ४०
५८.आनंद तो उसको ही मिलता ४१
५९.भक्तों के रखवाले अब तु ४१
६०.नेता बिगडा है गांव में ४२
६१.मन के भाव उज्वल ४३
६२.कितना प्यारा मेरा वतन ४३
६३.घुली घुली जा रही ४४
६४.कहता है तू मेरी खेती ४५
६५.हर वक्त तुम्हारे लिए ४५
६६.मानो कहना मेरा भाईयों ४६
६७.गांव में घूमे निठल्ला ४७
६८.सुनो जन की, करो मनकी ४७
६९.व्रजपाल दयालू श्याम मुझे ४८
७०.मोहे जगसे है राम प्यारा ४९
७१.अब काहे को खलबल करते ५०
७२.मेरे दिल की धडकन समझ.. ५०
७३.मत भूल रे ज्ञान ले ५१
७४.अब वक्त नही है मेरे पास ५२
७५.जानूं ना मैं पूजा अर्चा ५२
७६.कैसा अकडते ५३
७७.बातों का बनाना छोड़ दे ५४
७८.पहिले अपने मनको सुधारे ५५
७९.मन करे सदा शैतानी ५६
८०.औ कमली वाले मुझे, .. ५७
८१.गरीबी से गुजरा प्राणी ५७
८२.मुझमें ऐसी आदत बुरी ५८
८३.कान्हा हमार ५९
८४.हम तो बिक गये ६०
८५.जब बडो का है बुरा हाल ६०
८६.कोई चाहे तेरा कल्याण हो ६१
८७.सच्चाई को तु रख इन्सान ६२
८८.सुनरे छलिया ६३
८९.इस देश में रहने वालों ६४
९०.मेरा प्यारा वतन ६५
९१.आईये प्रभु मन मन्दिर में ६६
९२.जब आई काम करने की बात ६६
९३.सच्चे मन को जचे ६७
९४.तेरी यह माया ६८
९५.मुझसे बोल कान्हा ६८
९६.सत्य है जिसकी बानो ६९
९७.करना है तो करजा ७०
९८.सच्ची सेवा कर जो ७१
९९.जब तू मातृ भूमिका है .. ७१
१००. आखिर तुम्हारे ये लगते है ७२
१०१. मै तो अपनी गाडी चलाऊं ७३
१०२. जन्म मरण से घूरना है ७३
१०३. अगर तुझे प्रेम करना है ७४
१०४. चली रे मेरी सुरती ७५
१०५. सदा भवानी दाहिनी ७५
१०६. भारत की आजादी को ७६
१०७. सत्य छोडे झूठ पकडे ७८
१०८. कदर होती है दुनिया मे रे ७९
१०९. मानव की सेवा ही सच्ची... ८०
११०. स्वाभिमान से जो जीता है ८१

भजन क्र. १ (एक जीवन सहारा है...)

(तर्ज - एक प्यार का नगमा है ...)

एक जीवन सहारा है, हरिनाम ये प्यारा है ।
उसके बिना कुछ भी नही,
ये दो पल की कहानी है ॥धृ॥

दो राहे है चलने की, प्रभू इसका सहारा है
सच झूठ निरखता है, फल वैसा ही देता है ।
जिस ओर जो जाता है, वैसा ही वो पाता है ॥१॥

लेना और देना है, मंजिल को पाना है ।
सुख दुख ये साथी है, इस तन को ही सहना है ।
चौरासी के फेरे से छुटकारा करना है ॥२॥

नश्वर में ही ईश्वर की, वो झाँकी को पाना है ।
भक्ति के तरंगो में, हरदम हमे बहना है ।
जिसमे कोई सार मिले, उस पथ पे ही चलना है ॥३॥

माया से गुजर करके, परमार्थ करना है ।
आयीं हुई आँधी से, हरदम टकराना है ।
जीवन सफल बनाना है, ये नाता निभाना है ॥४॥

'जैराम' ना भूल होवे, जब तन से प्राण जावे ।
बस नाम ही दिल में रहे, इतना ही तो माँगना है ।
धन दौलत ना मांगू, तेरे नाम पे मरना है ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. २ (ज्ञानी रे ज्ञानी तेरा ढंग कैसा...)

(तर्ज - पानी रे पानी तेरा रंग)

ज्ञानी रे ज्ञानी तेरा ढंग कैसा
बिन पेंदे के लोटे जैसा ।।धृ।।
इस दुनियाँ में ऐसे भी तो ठग ये पाये जाते ।
मीठी मीठी बात बनाकर लोगों को है फसाते ।
अपना उल्लू सीधा करने, डाले ये फाँसा ।।१।।
पाप कर्म को तनिक न जाने, अपनी शेखी बखानें
कर्म करे वों झूठ मूठ के स्वारथ को बनाने ।
ऐसे लोगों के ही कारण हुई दुर्दशा ।।२।।
फूट की दरारे पाई जाती, धर्म की हानि होती ।
ईर्ष्या की ये लहरे देखो, चहु ओर मंडराती ।
फैला रखा है उन्होने ही आज ये तमाशा ।।३।।
ऐसे स्वार्थी लोगोंसे तुम, हरदम ही टकराओं ।
समाज सारा बिगड रहा है इनसे आज बचाओ ।
ध्यान देने पर सुधरेगी, देश की ये दशा ।।४।।
जैरामदास कहे इन्हे ही सच्चा मार्ग दिखाओ ।
तभी होगी देश की उन्नति इनको सबक सिखाओ ।
भुलो ना तुम कभी दिल से सत्य और अहिंसा ।।५।।

भजन क्र. ३ (ये गरीबों की जिंदगी है...)

(तर्ज :- इक प्यार का नगमा है)

ये गरीबों की जिंदगी है आटा दाल की तंगी है ।
रात दिन तरस रहे प्रभू कैसी ममता है ।।धृ।।
रो रो करके बिताये जीवन, मिले कपडा न इनके बदन
रोते है बच्चे इनके, दाने दाने इक इक कन ।
मोहताज होकर फिरते, ठुकराते सब दर पे ।।१।।

कोई करते न इन पर रहम, मसले जाते है हरदम ।
आह का न समझे मरम छूट रहा है इनका दम ।
निरे सांस मे इनकी जीवन, चहु ओर घूम रहा है मन ॥२॥
ललचाये देख रहे किसी खाने वाले को ।
आये न दया किसी को, तुच्छ समझे इनको ।
ऐसा मानव, मानव से, मानव का प्रेम नही ॥३॥
द्वेष इर्ष्या बढ रही है, आदर के भाव नही है ।
दुसरे को दबाने में आनंद मनाते है ।
ऐसी गलत राहों पर, चल रहा है मानय ये ॥४॥
कहता है जारामदास, इससे होगा धर्म का नाश ।
नहीं होगा देश विकास, भोगेंगे सब जीव त्रास ।
मानलो मेरी बात, सत्य पे रखो विश्वास ।
निभालो बंधु प्रेम, इसमें ही भलाई है ॥५॥

भजन क्र. ४ (तेरी चालाकी कब तक...)

(तर्ज - पग घुंगरू बांध मिरा नाची रे)

तेरी चालाकी कब तक चलेगी ।
सच झूठ को देख रहा भगवान ।

कैसा भूल रहा तु बाँवरे, अंधा बनकर फिरे मारे मारे ।
भूल अपनी सुधारले रे ॥१॥

चाँद ना बदले, सूरज न बदले, बदले न ये आसमान ।
बदली तेरी इंसानियत रे ॥२॥

मन की ये सुनता है हरदम, ठोकर खाये कदम कदम पर ।
गलती को न देख पाये रे ॥३॥

ठिक है सब कुछ तेरा, सत्कर्मो को तू है भूला ।
कैसे होवे भाग्य उजले ॥४॥

जैरामदास कहे प्रभु महिमा समझे बिना आवे न कामा ।
प्रभु सत्ता बिन, हिलता न पत्ता ॥५॥

भजन क्र. ५ (सच झूठ का साक्षी है...)

(तर्ज :- इंसाफ का मंदिर है ये भगवान)

सच झूठ का साक्षी है वो कण कण में समाया ।
क्यों व्यर्थ तू भरमाया, जीवन बेकार खोया ॥धृ॥

तू साफ करले अपने मन को ज्ञान साबुन से ।
है पास तेरे क्यों भटकता, पुछले दिलसे ॥१॥

जब तुझमें ही दुर्गुण भरे तब कैसी परख होय ।
है पास मृग कस्तुरी भ्रम में ही उमर खोय ॥२॥

ऐसी ही तेरी बीती उमर मै तू पन में ।
इसमे नही इहलोक सधा नही सधा पर लोक ॥३॥

जब तू भलाई चाहता, धर संतो का सत्संग ।
'जैराम' कहे जीवन सुधरने, में लगे न कोई देर ॥४॥

भजन क्र. ६ (जाओरी तुम हरि दर्शन...)

(तर्ज - पायोरी मैने राम रतन धन पायों)

जाओरी तुम हरि दर्शन को जाओ ॥धृ॥
उसके बिना कही सुख न मिले ।
रतन अमोलिक पाई ॥१॥
सब धन से प्यारो राम धन है ।
खरचत ना कम होई ॥२॥
कितना भी कोई भाग्यहीन हो ।
नाम रटत तर जाई ॥३॥
जैरामदास कहे, नाम की महिमा ।
राम से बढ कर होई ॥४॥

भजन क्र. ७ (पर जीवों पर सदा...)

(तर्ज :- परदेसियो से न अंखिया मिलाना)

पर जीवों पर सदा प्रेम रखना ।
उनके ही खातिर तम मन लुटाना ॥धृ॥

सच्चा है जो नर पर दुख जाने
सुख दुःख वो ओ एकसा माने
दुखियों के लिए अपना शरीर गंवाना ॥१॥

बदला न लेवे कर्तव्य समझकर
रखता ना ओ कभी काल का भी डर
मानव धर्म उसीने पहचाना ॥२॥

अपना पराया स्वप्न न देखा
सभी को माने एक सरीखा
उसी ने ही जग में संत कहलाना ॥३॥

मान बडाई कभी ना छुवे
लीनता से अपना जीवन बितावे
धर्म निती से सदा चलते रहना ॥४॥

जैराम कहे गुण हो जिसमे
अमर नाम रखा उसने जगत में
उसको प्यारा सपूत समझनाा ॥५॥

भजन क्र. ८ (घर आयो आज...)

(तर्ज :- जिया ले गयो जी मोरा सांवरिया)

घर आयो आज जैराम पाहुना ।
आनन्द गगन में समावेना ऽऽ ॥धृ॥
भूल गई ऽऽऽ

भूल गई मैं सब काम धंदा
नैनों में बस गये मेरे गोविन्दा
हुई दिवानी, नांचू मतवाली
लाज शरम मोहे रहीना ॥१॥

फिक्र चिन्ता सब छूट गई
चाहे मुझे कुछ भी कहे कोई ।
मानो ना मानो मेरा कहना ॥२॥

'जैराम' दास लागी लगन
उसके बिना जिया, पल भी न लागे
रैन सुहानी लागे ओ सुनी ऽऽ
मृगजल से न जावे तृष्णा ॥३॥

भजन क्र. ९ (सुन रे कन्हैया, राधा के रमैंय्या..)

(तर्ज :- सुनरी पवन, पवन पुरवैया)

सुन रे कन्हैया, राधा के रमैंय्या
नैंया अडी है मजधार मेरी आके
अब तू बन जा खिवैंया ॥धृ॥

तेरे बिना कोई नही अब मेरा,
आके प्रभु नाव को दे किनारा
फँसी है नैंया, बिनती सुन सावरिया
भूले का एक तू सहारा प्रभु मेरा
आके बन जा साथिया ॥१॥

तेरा मेरा साथ कई जन्मों का
भुल से ये आया मौका रोने का,
अब ना ठुकरा, माफ कर दे मुझको
त्रस्त हो गया हु और चल रही है जोरसे
माया की आँधिया ॥२॥

धोका ही होता है, जहाँ जाऊ मैं
शांती दो जिससे ये चैंन पाऊँ मैं
आज्ञा बिन तेरे, पत्ता भी नही हिलता
तेरी कृपा हो जिसपे, पापी भी तर जाय,
ऐसी तेरी है माया ॥३॥

क्यों सता रहे हो प्रभू अब हमें
हो रही जग में हँसी रहम ना तुम्हे
रूठे क्यों प्रभू क्या हमने है बिगाडा
माफ करो गल्तियाँ, जैराम को दो सहारा
शरण तेरे मैं आया ॥४॥

भजन क्र. १० (प्रीत लगी तेरी गजानन साई...)

(तर्ज :- बालम आन बसे मन मे)

प्रीत लगी तेरी गजानन साई, तनकी ये सुधबुध भुलाई ॥धृ॥

जिधर मैं देखू उधर तू दिखता,
तेरे बिन ना कोई सुहाता, ऐसी तेरी मोहनी मुरत
मेरे दिलको भाई, प्रीत लगी ॥१॥

काम काज में मन ना लागे, क्षण क्षण चित्त तोरे ओर भागे
खान पान ये ना सुहावे, ऐसी मेरी गति भई ॥२॥

रात दिन ये जगे, मेरे नैंना, चार अवस्था देखू मैं सपना
झांझ मजीरा कभी सुन पावू, बंसी नाद सुनाई ॥३॥

शान्ति ना मुझे कही मिल पाई, तिरथ यात्रा सब मैने की
धुन लगी तेरे नामकी, देहकी फिकर ना रही ॥४॥

तन मन धन निछावर किया, तुझको पाते शरण मैं आया
जैराम कहे विनती मेरी, संग देवो रघुराई ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ११ (किसी जीवों के काम मे रे...)

किसी जीवों के काम मे रे, तुम देवोगे नाहक दखल
कभी न होगा काम तुम्हारा, इस दुनिया में पुरा सफल ॥धृ॥

जीव जीवसे बैंर तू करता, करता न इसका बिचार
धन माया के गर्व मे रहकर, करता है तू व्यभिचार
कबतक रे चलेगा तेरा, छलकपट का ऐसा बल ॥१॥

स्वार्थ हित में डूबा तू रहता, हरने को दूजेका धन,
ऐसा है रे तू निर्दयी, दुखाते रहता दूसरों के मन
आवे न तेरे दिल मे रहम, ऐसी है रे तेरी अकल ॥२॥

दया धर्म तो कुछ ना जाने, अनितिसें करे व्यवहार
मांस मदिरा सट्टा, जुवा, इसका बनता है रे सरदार
चुगली, गालीं पर निंदा में, जीवन अपना कर गोल ॥३॥

जैरामदास कहे रे भाई, तुझको नहीं है किसी की शरम,
तुझ से तो अच्छे पशु बिचारे, वो करते है अच्छे काम,
शैतान सरीखां घुमता फिरता, रोना पडेगा अंतकाल कठिन होगा ॥४॥

भजन क्र. १२ (कहना तो आसान है...)

(चाल - हरन को भूमि का भार)

कहना तो आसान है, पर करने को लगती देर ॥धृ॥

लेने को तो हाथी लेना, कठिन है पालन करना
बिना बिचारे जो करता है, भोगे दुख का फेर ॥१॥

पढ़कर आत्मज्ञानी कहावे, आत्मतत्व नही जाने,
कागज मे वो राम को देख, मिला न अंतर सार ॥२॥

नियम यम बिन कुछ ना होवे, बिना करनी कुछ न पाये
जैराम कहे इन बातोंका, दिल में कर लो विचार ॥३॥

भजन क्र. १३ (देश मेरा हिंदुस्थान...)

(तर्ज - गंगा मेरी मां का नाम)

देश मेरा हिंदुस्थान, अहिंसा को दे स्थान
नीति धर्म का कट्टर समझो, अध्यात्मकी है ये खान ।।धृ।।

मर्यादा का पालन हारा, समदृष्टि का तारा,
चिढ़ इसको बुरे नीतिकी, दया शांति का प्यारा ।
समावेश है ऽऽ सब धर्मोका माने सबको समान ।।१।।

अपनें बल पर जिंदा रहना, मुफ्त न किसी का खाना
रूखा सुखा खाकर भी, हरदम मुस्काते रहना
सत्य के लिए ऽऽ प्राण गवाये, येही इसकी शान ।।२।।

अपने हक का फर्ज निभाना ये ही इसका बाना
इसपर जिसने जुल्म किया, हरदम उससे टकराना
स्वाभिमानसेऽऽ बितावे जीवन, विश्वास हरि के नाम ।।३।।

साधु संत का आश्रय लेकर, यहाँ की जनता चलती
सच्चा भरोसा ईश्वर का ये, अपने हृदय में रखती
गीता रामायण ऽऽ आरती पूजा, दैनिक ये जीवन ।।४।।

हिरे, मोती और जवाहर, इसका न इनको गूमान,
मातृभूमिके रक्षक को ही, मिलता यहाँ मान,
सच्चा खजाना ऽऽ सती संत है, कहता है जैराम ।।५।।

भजन क्र. १४ (देश धर्म के काम जो...)

(तर्ज - वृंदावन का कृष्ण कन्हैया)

देश धर्म के काम जो आवे सच्चा वो ही कहलाता
उसके ही बलपर चलती है, आज देश की मानवता ।।धृ।।

उसके ही कर्मो में छुपी है, मातृभूमिकी सब ममता

सत्य करूणा समदृष्टि से लाये सब में वो समता
सबके हित में तन को लगाये, सुख दुःख का वो ही कर्ता ॥१॥

पर दुख को वो आपना समझे, पर पीर हरने को तत्पर
कितनी भी आपत्ती आये, धैर्य न छोड वो क्षणभर
ऐसे दृढ सिद्धांत है जिसके, मरकर भी जीवित रहता ॥२॥

बनके नेता संगठन का एकता सब में वो लाये ।
बांध के सबको प्रेम धागे में, सब में प्रिति जगाये
तनिक न किसीसे भेदभाव है, दूर करे वो अज्ञानता ॥३॥

जैरामदास कहे ऐसे गुण, जिस प्राणी के दिल में हो
वोही नर आकर इस जम में, सच्चा सपूत कहाये वो
इसे भूलकर जीनेवाला जीवित भी मृत ही रहता ॥४॥

भजन क्र. १५ (छोड गये है बापूजी...)

(तर्ज :- तुम पे बडी जिम्मेदारी.. देख रही दुनिया सारी)

छोड गये है बापूजी, हमपे बडी जिम्मेदारी
फर्ज निभाने को तनमन से, दिलसे करो तुम तैयारी ॥धृ॥

देखो कहीं ये भूल न होवे, प्रण को उनके निभाने को
करना है अब देश कार्य को, सब मिल उन्नति लाने को
त्यागो आलस को वीरों, मातृभूमि दे रही ललकारा ॥१॥

कर दो तन मन धन को निछावर, अपनी भलाई चाहते हो
कभी न मिलेगा ऐसा मौका, देश धर्म को चाहने को
अमर रहेगा नाम तुम्हारा, मरकर भी किर्ती तुम्हारी ॥२॥

भेज दो सब को ऐसा संदेशा, कोई न वचनों को टाले
सत्य अहिंसा की क्रांति से, उज्वल जीवन को कर ले
कंधे से कंधा जोडकर, भूल जावो गरिबी अमीरी ॥३॥

स्वावलंबी जीवन बनाये, राष्ट्रधर्म निभाने को
एकता के नीवपर चले हम, आजादी को टिकाने को
समझाये जैराम इसमे, भलाई हमरी तुमरी ॥४॥

भजन क्र. १६ (कर्म तेरे जब उज्वल होंगे...)

(चाल - चांदी की दिवार न तोडी)

कर्म तेरे जब उज्वल होंगे, प्यार से पुकारेगी जनता
तेरे लिये मर मिट जायेंगे, सबका भला तू कर सकता ॥धृ॥

सबकी भलाई मेरी भलाई, भावना ऐसी मन में हो
देख जब दुजे दुःख को तू, रोना तुझे भी आता हो
तेरे लिए फिर इस दुनिया में कही न पडेगी कमतरता ॥१॥

जब तू चन्दन जैसा घीसे सारा जगत तेरे पिछे
कितनी भी तुझपर आये मुसीबत, हल होगी हसते हसते
प्रभुजी तेरे साथी बनकर, देते रहेंगे दिलासा ॥२॥

सच्चा प्रेम तेरा जगा हो, मेरा कुछ भी यहाँ नही
सबपर सत्ता भगवान की है, ये धन दौलत सब भाई
ऐसा तेरा जब व्यवहार होगा, तर्भी टिकेगी मानवता ॥३॥

जैरामदास कहे सुन भाई, इन वचनोपर ध्यान तू दे
प्रेम दे और प्रेम लेते जा, भेद भाव मन से भगा दे
अमर रहेगी किर्ती तेरी, ऐसे काम तू करते जा ॥४॥

भजन क्र. १७ (इंसाफ का मंदिर है...)

(चाल - इंसाफ का मंदिर है ये भगवान का घर है)

इंसाफ का मंदिर है, और न्याय का दरबार
परख करके चलते जा, होगा तेरा उद्धार ॥धृ॥

दुर्गुण को तू हटाले, नव जीवन बनाने को
इसमे तेरी ऽऽ नैय्या होगी, पार मजधार ।।१ ।।

होवे जहाँ भी कमतरता, पुर्ति उसकी कर
उज्वल बना ऽऽ ले, अपना मन फिर रहे न काल डर ।।२ ।।

अब प्रेम करना सीख ले तू, अपनी आत्मा से
कोई न रहे ऽऽ दुश्मन तेरा, सपूत कहे नर ।।३ ।।

परिवार सम सब प्राणीको, घर विश्व मान ले
धर संतोका ऽऽ सत्संग, कर ले जीवन अमर ।।४ ।।

जैराम कहे जीवदान, देने का, स्थान है
आश्रम है ये ऽऽ समझे जो नर, उसको मिलेही फल ।।५ ।।

भजन क्र. १८ (मेरे दिल में लगी है, ऐसी लगन...)

(जैराम बाबा के सच्चे सिद्धांत) (चाल - कदर न जाने ना मेरा बालम, बेदर्दी)

मेरे दिल में लगी है, ऐसी लगन
सुखमय हो सभी के जीवन ऽऽ ।।धृ ।।

देख न पाऊ किसी को दुखी
तडफ है ऽऽ में, संसार सबका होवे सुखी ।।१ ।।

अन्न, वस्त्र मिले सबको
पिसा न जावे कोई किसी के जुल्मों से वो ।।२ ।।

न्याय नीति के राहोंपे चले
नाता निभाये ऽऽ प्रेमभाव का वो सबसे ।।३ ।।

किसी भाईपर आये मुसीबत ऽऽ
तत्पर रहे ओ ऽऽ मदत करने ।।४ ।।

अन्याय का, का करे प्रतिकार ऽऽ
न्यायी का ओ ऽऽ करे सत्कार ।।५ ।।

जैरामदास कहे, यही मेरी आस
कर जो रे ऽऽ विनती करूं प्रभू कर विकास ॥६॥

भजन क्र. १९ (ये भारत भूका छोरा...)

(तर्ज - मेरा नाम है चमेली)

ये भारत भूका छोरा, बापू का काम अधूरा
पूरा करना फर्ज हमारा, तन मन धन सें
ये भूल ना होने पाये, आजादी को टिकाये
त्यागो आलस को, और लगों तुम काम से ॥धृ॥

अपने गांव को स्वर्ग बनाओ, भेदभाव हटाओ
एक दूजे से प्रीति करना, हिलमिल काम करना
हो ऽऽ साकार हो स्वप्न बापू के ऽऽ
संगठन सें चलते रहना, भूलो न उनका नारा ॥१॥

खेती की ये मेहनत करके, उत्पादन को बढाओ
फैल ना पाये भूखमरी ये बेकारी को हटाओ
हो ऽऽ ये जिम्मेदारी हम तुम पर ऽऽ
ज्ञान बुद्धि का आश्रय लेकर चलना काम हमारा ॥२॥

निरक्षर को साक्षर बनाओ, आदर्शता से चलने
इमानदारी दिल में रखकर, पाप कर्म को भूलने
हो ऽऽ ऊँचे विचार हो सबके
देर न लगने पाये, होवे जीवन में उजियारा ॥३॥

सत्य अहिंसा की राहोंपर, चले सभी प्राणी
जैराम कहे सुखमय जीवन, होवे सभी प्राणी
हो ऽ इसमें ही सच्ची भलाई ऽऽ
इन वचनों को जो पालेगा, नांव लगेगी किनारा ॥४॥

■ ■ ■

भजन क्र. २० (आज छोडी है, मानव...)

(तर्ज :- दो हंसो का जोडा बिछड गयो रे)

आज छोडी है, मानव ने नीति मानवता
इसीलिए आते संकट विपदा ॥धृ॥

प्यार की राहे भूली, सच्चाई से मुख मोडा
स्वारथ में डूब रहे, अंग में है क्रोध भरा
विचार न तनिक पाप पुण्य, सरपे काल खडा
इसीलिए भगवान का कोप ये होता ॥१॥

धरे न पुरखोंके वचनोंको कभी ये दिल मे
करे न प्रेम सच्चे कर्मो से, नितीसे
बुराईयाँ देखते रहे, वो पर जीवों की
पहिचाने न अपने वो, कभी दुर्गुण को
इसीलिए फैली जगमें दानवता ॥२॥

नाता तोडा निसर्ग और उसने प्राणी से
भूलते वो चला, दया भाव और करूणा को
कहे जैराम, हुआ उलटा ये, खेल दुनिया का
जहाँ भी देखो है, बोलबाला अन्याय का
भगवान की सत्ता भी वो ठुकराता ॥३॥

भजन क्र. २१ (इन स्वार्थी लोगोंसे...)

(तर्ज :- मुरली वाले..)

इन स्वार्थी लोगोंसे हुआ मैं तंग
हर वक्त मुझपर जमावे ये रंग ॥धृ॥

अपने गरज के लिये दौडे दौडे आते
काम निकलने पर ये बदनाम करते
इनके रवैये से मै हो गया दंग ॥१॥

हर वक्त विश्वास सबका मैने किया
आखिर में मुझ को छोखा इन्होंने दिया
डालकर मुसीबत में छोड दिया संग ॥२॥

भोलेपन का फायदा, कइयोंने उठाया
विश्वास देकर विश्वास घात किया
त्रस्त हो गया है, मेरा जीवन ॥३॥

कहे 'जैराम' किसपर करू भरोसा
तेरे बिन भगवान, किसी पर न आशा
तेरे नामपर मरना जीना, यही मेरा ढंग ॥४॥

भजन क्र. २२ (प्रेमी मेरा वो सच्चा है...)

(तर्ज :- एक प्यार का नगमा है)

प्रेमी मेरा वो सच्चा है, मेरे नीति पे चलता है
उससे मेरी पटती है, वही मेरा सितारा है ॥धृ॥

उसकी चिंता रहती है हरदम याद आती है उसकी क्षणक्षण
रहे मन में नही चैन, समझे मेरा वोही मरम
उसपे जीवन निछावर है, उसको सबकुछ मान लिया ॥१॥

मेरे काम जो आता है, उससे मेरा नाता है
वोही माता पिता है वो ही मेरा भ्राता है
सब कुछ है वो ही मेरा, वो ही मेरा रक्षक है ॥२॥

उसके लिये मैं हूं कुर्बान, बाजी है तन मन धन
हर्षित सत्मार्गपर, धर्म नीति से चलता हो
दीन दुखियों को अपनाये वो ही मुझे प्यारा है ॥३॥

दुजे दुःख में दुखी होवे, दुजे सुख में सुख पावे
है जिसकी भावना ये, वो ही सबका कर्ता है
जैरामदास कहे वो नर, मेरी शक्ति है और बल
उसे मेरा ऽऽ है भरोसा, वो ही मेरा सिकंदर ॥४॥

भजन क्र. २३ (जिसकी जिसपर है श्रद्धा...)

(तर्ज :- सुन चंपा ऽ ऽ सुन तारा)

जिसकी जिसपर है श्रद्धा, वो ही होता उसपर फिदा
अरे बडा मजा आवे, वो दिन और रात
खो दिया सुध बुध, सुझे ना दिन रात ॥धृ॥

सच्चा है वो ही मतवाला, जग में उसका है बोलबाला
स्वरूप पाया, छोडी माया, लगे ऽऽ राम, प्यारा ॥१॥

बना है राम का वो बंदा, खोटा करे न कभी धंदा
सत् अपना, शान्ति पाया, हुवा भवपारा ॥२॥

देखे वो एक ब्रम्हसारा, प्रभु से नाता उसने जोडा
जहाँ जाये, मिट्टी छुये, स्वर्ण वो बन जाये ॥३॥

कहता है जैराम सुनो भाई, जिसकी लगन लग गई
ऐसा छन्द, परमानंद,
भक्त भगवान का इशारा ॥४॥

भजन क्र. २४ (पायो रे मैने राम रतन...)

(तर्ज :- पायो रे मैने राम रतन धन पायो)

पायो रे मैने राम रतन का खजाना ॥धृ॥

धन दौलत संसार फीका लागे ऽऽ
क्षणक्षण हरि दर्शन को भागे ऽऽ
किसी का न लेना देना, पाया रे मैने रामरतन खजाना ॥१॥

जो भी करता, काम जगत में ऽऽ
हरि को बसा लिया मैने दिल में ऽऽ
ज्योत से ज्योत जगाया, पाया रे मैने रामरतन खजाना ॥२॥

छूटी ये संसार की झंझट ऽ ऽ
हरी ये संसार मैने घटघट ऽ ऽ
अपने नयन ऽ बसाया, पाया रे मैने रामरतन खजाना ॥३॥

जैराम कहे गुरू कृपा बिन ऽऽ
मिलत नही किसी को भी ये धन ऽऽ
जिसने शब्द पहिचाना, पाया रे मैने रामरतन खजाना ॥४॥

भजन क्र. २५ (मुझे ध्यान लगा...)

(तर्ज :- तन डोले मेरा)

मुझे ध्यान लगा, वैराग ऽ जगा
मैं गया उन्मनी स्थान रे, वहाँ पाया मैंने सांवरिया ॥धृ॥
निर्मल बन में अपने तन में मन मंदिर भुवन में
झांकी देखी मैने वहाँ की, पाया रे निजधाम
झांझ मंजीरा ढोलक बाजे, वहाँ बाजे पायलिया ॥१॥
नूतन गायन नित्य होवे ऽ राधा रास रचाये
कृष्ण ये ही छबी दिखाये, मन मोहन गिरधारी
खेल इनका है नटखट पाये झटपट, बिरलेने ही आजमाया ॥२॥
जैराम कहे गुरू कृपाबिन, मर्म न इसका जाना
ये सब खेल है आत्मतत्व का, आत्म तत्व पहचाना
आप में आप देखा जिसने, जन्म उज्लव किया ॥३॥

भजन क्र. २६ (आज जगमें जहाँ वहाँ ...)

(तर्ज :- एहसान मेरे दिल पे तुम्हारा है दोस्तो)

आज जगमें जहाँ वहाँ हो रहा है अत्याचार ।
जिधर देखो उधर फैल रहा है भ्रष्टाचार ॥धृ॥

पाप पुण्य ना देखे, नीति धर्म न परखे ।
रख भाव करे मन में स्वार्थ अपनाही देखे ।
तत्व न मिलते है किसीसे - ऐसा ही व्यवहार ॥१॥

ढूंढू बुराईयाँ नित, दुसरों की गल्तियाँ ।
देखे न अपने अवगुण, ऐसे है छलियाँ ।
मुख मोड मानवता से करे, दानवता से प्यार ॥२॥

ईर्ष्या की लहरे उड रही है ये चारों ओर ।
शांति का झूठे जग में लगता नहीं है ठौर
कुचले जाते निर्दोषी, हो रहा है अत्याचार ॥३॥

जैराम कहे दया धर्म ना किसी के पास
झूठी दिखावे ममता - धरकर के ये खोटी आस ।
ऐसे नीति से जगका - होगा एक दिन संहार ॥४॥

भजन क्र. २७ (स्वाभिमान के बल पर जिये जो...)

(स्वाभिमानी पुरूष के लक्षण) (तर्ज :- क्या मिलिये ऐसे लोगो से)

स्वाभिमान के बल पर जिये जो, वो नर अमर कहलाता है
स्वावलंबी जीवन बिताकर - वो ही मोक्षपद पाता है ॥धृ॥

मन रखे ना किसी की दौलत मे कर्म करे निर्भय बनकर
भय रखे नित, नितीधर्म का सत्यता पर रहे निर्भर
प्रींत करे वो सच कर्मोसे - वो ही सपूत कहलाता है ॥१॥

चन्दन जैसा घिसता रहे, जीवन में खुशबू लाने को
पवन प्रवाहित होवे जगमें, कीर्ति महक महकाने को
मुरझाई कलियों मे हरदम - ज्ञान फौवारा देता है ॥२॥

चांद बिना चकोर न भाये - ऐसी प्रीति कर आत्मा से
लगन उसकी वैसी हीं रहती - दीन दुःखियो के दुखों से
मान अपमान का ध्यान न जिसे - जनसेवक कहलाता है ॥३॥

कर्म हो उसके भजन बने है - जो जो करता है वो काम
छबी निहारे वहाँ प्रभू की - मिले उसे वहाँ शांति धाम
जैराम कहे वोही प्यारा - सबका दुलारा होता है ॥४॥

भजन क्र. २८ (धन पुत्रका गर्व जिसे हो...)

(घमंडी पुरूषो के लक्षण) (तर्ज - क्या मिलिये ऐसे लोगों से)

धन पुत्रका गर्व जिसे हो - जिन्दे मे मरे रहते है
पशु सरीखा जीवन इनका - पेट के खातिर जगते है ॥धृ॥

आशा, तृष्णा मन में रखकर - व्यवहार करे हर दम झूठा
अपने थोथे गाल बजाकर - स्वार्थ हितमें रहे लिपटा
पर जीवों को दुख देने में - अपनी खुशी मनाते है ॥१॥

चाले इनकी अजब निराली - हरदम करते गद्दारी
रहम नही थोडी भी दिलमे - आदत है इनमे बुरी
शैतानीं हरदम करके ये - भोले जनों को ठगते है ॥२॥

लाज शरम का डर नही इनको - बतलाते बुद्धिमानी
धर्म कर्म को ताक में रखकर - करते अपनी मनमानी
मानवता को भूल करके ये - दानवता से चलते है ॥३॥

जैरामदास कहे ऐसे नर - भूमि भार कहाते है
इह लोक सधे न परलोक सधे - प्रेत सरीखे घुमते है
लाद के गठरी सरपर दुखकी आवागमन में बंधते है ॥४॥

भजन क्र. २९ (कर्म भूमि में आये तो ...)

(तर्ज :- दुनिया मे हम आये है तो जीना ही पडेगा)

कर्म भूमि में आये तो काम करना ही होगा
इस भव से तरना है तो भजन करना होगा ॥धृ॥

प्रपंच करके परमार्थ को जिस नर ने चलाया
नीति नियम को साध, मार्ग सत्य का लिया
चले नेकी से हर वक्त वो प्रभू को पायेगा ॥१॥

विचार कर क्षण क्षण में कदम अपने बढाता ।
त्याग राह झूठकी वो सत्य हाथ मे लेता
किसी से न कर बैंर वो जीवन सुधारेगा ॥२॥

देना और लेना प्रेम यही उसको है भाता
वो ही जोडे जन्म जन्म का सब जीवो से नाता
इहलोक और परलोक में सुख वही पायेगा ॥३॥

जैरामदास कहे कर्म अपने तुम परखो
आयेहो किस कामसे यह मर्म तुम निरखो
मर्म न समझे जो वो चौरासी भोगेगा ॥४॥

भजन क्र. ३० (हरी के भजन बिना...)

(तर्ज :- दुनिया में हम आये है तो जीनाही पडेगा)

हरी के भजन बिना किसीने सुख नही पाया
लाखो में बिरले ने इस मर्म को पाया ॥धृ॥

लेने के लिये लगता नही द्रव्य खजाना
दिखने मे आसान है पर मुश्किल है लेना
दृढ़भाव जिसने मन में रखा उसने आजमाया ॥१॥

नीति नियम के व्रत को पालन जो नर करे
उज्वल बना के भाव श्रद्धा-दिल में धरे
षड़विकारों को जीत - आशा तृष्णा भगाया ॥२॥

त्याग, वैराग और ज्ञानसे भक्ति को पाया
धर के संतो का संग वो जीवन मुक्त भया
निश दिन आत्मचिंतन से स्वरूप मे रम गया ॥३॥

जैराम कहे राम रस जिसने ग्रहण किया
सच्चा मजा मानव जनम का उसने ही लिया
मुर्ख न जाने भेद ये भलों ने आजमाया ॥४॥

▪ ▪ ▪

भजन क्र. ३१ (जो जाने दिल की बात ...)

(तर्ज :- मज भेट सख्या गोविंदा)

जो जाने दिल की बात - आत्मज्ञानी वो ही कहलाता रे ॥धृ॥

आंतरिक अनुभव जिसने पाया
सब घट में है वो ही समाया
अज्ञानी की निकाले भ्रांति रे ॥१॥

अन्दर उज्वल - बाहर उज्वल
जैसे निर्मल - गंगाका जल
पोपट पंछी जाने न मात रे ॥२॥

द्वेष भाव नही छल कपट
रहे इनको नित् भक्ति का बल
बाँझ जाने ना गर्भवती की बात रे ॥३॥

भूत भविष्य दुनियां को बताये
अपना भविष्य देख ना पाये
वो करे नित अपनाही घात रे ॥४॥

जैराम गुरू बिन अनुभव न पाये
मुढ को कितना - ज्ञान बताये
कई बिते दिन और रात रे ॥५॥

भजन क्र. ३२ (बापू के वचनों को निभाने...)

(तर्ज :- चांदी की दिवार न तोडी)

बापू के वचनों को निभाने हमको मरना जीना है ।
उनके स्वप्न साकार करने हमें तैयार रहना है ॥धृ॥

रहा अधूरा काम उनका, फर्ज हमारा पूरा करना
चाहे कितनी मुसीबत आये, चाहे ये तन मन धन जाये
उसकी न पर्वा हमको तनिक भी आजादी को टिकाना है ॥१॥

सुखी बनाने जीवन सबका सबसे प्रीति जुड़ाना है
नीच उँचका भेद हटाकर सबको गले लगाना है
एकता के नीव पे चल ऐसा कदम उठाना है ॥२॥

संगठन के पुजारी बनकर सबको आगे बढाना है
नजर डाले कोई देशपे हमारे उसको सबक सिखाना है
कभी न कर पाये गद्दारी गद्दारों को भगाना है ॥३॥

जैरामदास कहे वतन का गर्व सब मे भरना है
शपथ दिलाकर मर मिटने को तैयार करना है
कितनी आपत्ती आये टकराकर हमे जीना है ॥४॥

भजन क्र. ३३ (दुनिया देखो लन्दी फन्दी...)

(तर्ज :- रामचंद्र कह गये सिया से)

दुनिया देखो लन्दी फन्दी स्वार्थ हित प्रीति करती है
अपना उल्लू सीधी करने हर क्षण तत्पर रहती है ॥धृ॥

गरज पडी तो दौड के आते झूठी प्रीत दिखाते है
काम निकल जाने पर वो फिर नमक हरामी करते है
ऐसी दुनिया की रीति मतलब अपना साधते है ॥१॥

सज्जन करते उनकी भलाई पर वो बुराई करते है
पाप पुण्य का विचार मन में थोडा नहीं ये रखते है
निर्दयी बनकर दानवता का भाव ये मनमें रखते है ॥२॥

सत्कर्मो को छोड़ के ये जन झूठी संगत में रमते है
ठग ठग का मेला बनाकर साधू संतो को सताते है
सत्य का तो नाम न, सबपर नीच भावना रखते है ॥३॥

इनके ही बुरे कर्मोसे धर्मपतन पर जाता है
रोक न लगाये इनकर अगर तो समाज चरित्र हीन बनता है
जैरामदास कहे इन सबसे बचना है, बचकर हमको चलना है ॥४॥

भजन क्र. ३४ (तेरी ऽ ऽ नेकी बदी...)

(तर्ज :- सुख के सब साथी)

तेरी ऽ ऽ नेकी बदी, देख रहा है भगवान
उससे ऽऽ उससे ऽऽ उससे छुपी ना कोई बात है ॥धृ॥

कणकण का है जानन हारा सबका वो है पालनहारा
निर्बल का है वो बलिहारा निर्धन का है धन ॥१॥

जगका वो ही कर्ता धरता तीन लोकमें उसकी सत्ता
किस गरूर में भूला प्राणी छोड दे गर्व गुमान ॥२॥

कितनी बतावे तू चतुराई झूठी चाले छुप ना पाई ।
दुर्योधन सा व्यवहार तेरा ज्ञानी समझलेता है भाई ॥३॥

सच्चाई का साथ वो देता झूठ फरेब को है ठुकराता ।
जैसे जिसके भाव है मन के वैसाही देवे गुण ॥४॥

जैराम कहता अन्तर्यामी सारे जगतका है वो स्वामी ।
उसके आगे कुछ ना चलती भ्रम छोड नादान ॥५॥

भजन क्र. ३५ (मैं जोगी जोगन...)

(तर्ज - माल कौंस राग)

मैं जोगी जोगन छाडन निकला ॥धृ॥

ढूंढा मैनें तीनों लोक को, वन, दरिया और तीरथ को
कही न लगा ऽऽ पता मुझको ॥१॥

नैंन तरसते दिन रात, अलख पुकारू रात दिन
सोवत जागत अष्ट प्रहर ॥२॥

मुद्रा आसन ध्यान लगाऊं, माला लेकर नामजप करूं
मिले नही उसका ठिकान ॥३॥

ढूंढत ढूंढत पांव थक गये, बेचैनी आये मन में मेरे
कोई न बताये राह ॥४॥

जैरामदास गुरू शरण में आया, देह के अंदर जोगर दिखाया
जुड गया उनसे जिया ऽ ऽ ॥५॥

भजन क्र. ३६ (अमर हो गया जो नर...)

(तर्ज :- तेरे पूजन को भगवान)

अमर हो गया जो नर, फिर क्या दुनिया का रखे डर ॥धृ॥

छोडी दुनिया की लाज, करने जन सेवा का काज
मन मे रखकर निष्काम भाव, समझे सबको कुटूंब परिवार
सब आत्माको अपना देखे, अवगुण सत्‌गुण पल में परखे
जैसे जिसके होवे विचार, उसको वैसा पटाये सार ॥१॥

सतसंग बिन करे न दूजी बाते, सबको धर्म नीति सिखायें
मानव धर्म का देकर ज्ञान,करते है सबका उद्धार ॥२॥

जड़ चेतन मे सत्य पहिचाने, अमीर गरींब को एक माने
बसाने नैनों मे भगवान, विश्व बन गया उसका घर
भेद भावना कभीं न जाने, सब को ईश्वररूप ही जाने
बतावें ऐसा जैरामदास, वहीं प्राणी होवे अमर ॥३॥

भजन क्र. ३७ (हमारे बोल की किंमत...)

(तर्ज :- मुझे है काम ईश्वर से)

हमारे बोल की किंमत तुम्हारे पास नही भाई ।
निभेगी कैसी तुम्हारी, हमसे ये मिताई ॥धृ॥

तुम्हारा कितना करे सत्कार, उसका न तुम्हे विचार
प्रेम से पेश होते तुमसे आखिर तुम करते बुराई ॥१॥

तुम्हारे लिए तन घिसे, प्राण भी कुर्बान करे
उसका न तुम्हे ध्यान है आखिर को करते लढ़ाई ॥२॥

सताती रहती है हरदम, तुम्हारे भलाई की चिंता
देखकर तुम्हारी दुर्दशा, तडपता जीव हरदम ही ॥३॥

कहे जैराम बुरा न मानो, संत परोपकार में घिसते है
अपने समान सबको माने, यही उनका कर्तव्य भाई ॥४॥

भजन क्र. ३८ (तुम हमसे करते गद्दारी...)

(तर्ज - बन्सी का बजाना छोड दे)

तुम हमसे करते गद्दारी, हम कब तक सहन करेंगे
करे तुमसे बाते प्यार भरी, तुम छलते हमे रहोगे ॥धृ॥

व्यवहार तुम्हारा है यह गंदा मन तुम्हारा है यह अंधा ।
देखे न अपनी गल्तियाँ, काम क्रोध के पिछे भागे ॥१॥

खुद को समझते हो धनी ज्ञानी, हमे समझे हो अडानी
ज्ञानी से अनपड अच्छे है, जिसके विचार ऊंचे होंगे ॥२॥

अधर्म अन्याय का तुम्हारा व्यवहार, सत्य का नही है कुछ भी सार
चालबाजी हमसे करते हो, कैसे शीश तुम्हे झुकायेंगे ॥३॥

जैराम कहे मानवता देखो, नीति मर्यादा को परखो
भाई चारे का व्यवहार करो, हम तुम्हारे बन जायेंगे ॥५॥

भजन क्र. ३९ (अब काहे को बकवास करते...)

(तर्ज - बन्सीका बजाना छोड दे, सुदर्शन चक्रधारी)

अब काहे को बकवास करते हो, हम बात न करते तुम्हारी ॥धृ॥
नाहक झगडा मोल लेते हो, तुम्हारी हमारी नही बोली

हमसे तुम्हारा न मतलब है, ना कुछ हमको देते हो
हमारा काम है हरी भजन नाहक करते मुंहजोरी ॥१॥

झूठे लाछन के लगाते नारे, इसमे तुमको क्या मिलेगा प्यारे
काला अपने मुंहको लगाते हो, कबतक चलेगी गद्दारी ॥२॥

बलधारी था रावण कितना, सीता हरण उसने किया
जब आया मौका रामसे, दस शीश उसके उतरा ॥३॥

पर निंदा पर ध्यान जो रखता कहीं भी उसकों सुख ना मिलता
शैतान बना जीते जी वो, घुमे चौरासी की फेरीं ॥४॥

जैराम कहे जग में आये हो, लायक काम करके दिखाओ
अमर नाम छोडकर जाओ, इसमें तुम्हारी बहादूरी ॥५॥

भजन क्र. ४० (दो दिन की जिंदगी फिर...)

(तर्ज :- गरीबों की जिंदगानी भारी सजा)

दो दिन की जिंदगी फिर क्या आना कानी ।
कोई आये कोई जाये यही कहानी ॥धृ॥

किसका रहा महल, और किसकी रही दौलत ।
किसका रहा हाथी, घोडा, किसकी रही जमात
टिकी नहीं कभी है किसीकी जवानी ॥१॥

किसकी रात किसका दिन इसका न भरोसा
कोई कहाँ जाये इसका न ठिकाना
गर्व की बात में है नादानी ॥२॥

बात करे सौ साल की पलका न ठिकाना
परखा, उसने ही तोडा आना जाना
वेदशास्त्र संतो की यही है वानी ॥३॥

जैराम कहे क्यों तू बनता दीवाना
झूठे माया का देखता है सपना
निजरूप पहिचान ले अज्ञानी ॥४॥

■ ■ ■

भजन क्र. ४१ (ऊँचे भावको दिल में रखकर...)

(तर्ज - सच्चे सेवक बनेंगे)

ऊँचे भावको दिल में रखकर
आदर्शता सिखलायेंगे
अरे, गरीब अमीर का भेद मिटाकर
जीवन ऊँचा बनायेंगे ॥धृं॥

अपना पराया भेद भुलाकर
सबको गले लगायेंगे
जिसमे हो कुछ कमी उसे हम,
संच्चा, ज्ञान सिखायेंगे
किसी बात की कर्मी ना होये
ऐसा सबक सिखायेंगे ॥१॥

संगठन के पुजारी बनकर
नीति धर्म समझायेंगे
हर प्राणी में रामराज्य की
शक्ति भर दिखलायेंगे
गुंडा, गर्दी, पाखंडियों को
डंडा लेकर भगायेंगे ॥२॥

बापू के उन वचनों को
पूरा कर दिखलायेंगे
आजादी की मशाल लेकर
अंधकार को मिटायेंगे
पिछडी हुई पुरानी रूढियाँ
अंध श्रद्धा हो हटायेंगे
मानवता का पाठ पढ़ाकर
दानवता को भगायेंगे ॥३॥

मानवता का मंदिर बनाकर
आत्म ज्योत जगायेंगे
सुविचार के फूल चढाकर
अपना फर्ज निभायेंगे
गांव के झगडे वहीं मिटाकर
सच्चा न्याय दिखायेंगे ॥४॥

जैरामदास कहे किसी पर
अत्याचार ना होने देंगे
सतर्क रहकर प्राण भी देकर
अन्याय को दूर हटायेंगे
बेईमान और पाजी गधोको
अच्छा सबक सिखायेंगे ॥४॥

भजन क्र. ४२ (तेरी रहेगी जगमे शान...)

(तर्ज - तेरे पूजन को भगवान)

तेरी रहेगी जगमे शान, अपने-परसे जगको जान ॥धृ॥

जो, जो बीते तेरे उपर
वैसा तू दूसरों को समझले
अपनी आप करले पहचान ॥१॥

तूही अपना दुख ना जाने
पीर पराई कैसा माने
बिती बात भूला नादान ॥२॥

जैसे तेरे भाव है मन में
वैसाही तू जगको देखे
बुरा अच्छा देखे मन ॥३॥

काम, क्रोध भरा है तुझ में
दया, भाव आयेना दिल में
व्यवहार करे जैसा शैतान ॥४॥

पाया आत्मअनुभव जिसने
वो ही सुख, दुःख सबके जाने
जैराम वही है रे महान ॥५॥

भजन क्र. ४३ (हम आये तेरे दर पे ...)

(तर्ज :- हम लाये है तुफान से किश्ती निकालके)

हम आये तेरे दर पे आज भावना लेके
ठुकराना नहीं हमको नादान समझके
तुम बिन ना कोई साथ मेरा डुबती नैय्या के ॥धृ॥

माया के जाल का मैने छोडा रास्ता
बिठाई मैने दिल में तेरी एक आस्था
दे दो सहारा मुझको तुम बाहोंको खीचके ॥१॥

कितने अडंगे राहोंपे खडे है सामने
पगपगमे घबराय जिया धैर्य ना मन में
मुसीबते आ रही, पहाड कामक्रोध के ॥२॥

आशा और तृष्णा रीछ ये संसार के बन में
आव्हान करे लोभ शेर विश्व गगन में
मद मोह भेडिया ये करे शब्द तान के ॥३॥

जैरामदास कहे तेरे बिना कोई ना आधार
नैय्या अडी कन्हैया मेरी आज मजधार
तुम लाज रखो मेरी प्रभु विनती सुनके ॥४॥

भजन क्र. ४४ (करे भगवान पूरा उसका...)

(तर्ज :- अगर है ज्ञान को पाना)

करे भगवान पूरा उसका जो सच्चे राहोंपे चलता है ॥धृ॥

वह किसीसे कुछ न मांगता, भगवान पूरा करते है
सभी को अपना कहता है, मजा ईश्वर की लेता है ॥१॥

निष्काम कर्म है जिसके, उसको ही सब कुछ मिलता है

चाहे जगभी रूठे उसपर, न कोई बिगाड सकता है ॥२॥

हो सब जीवो के प्रति भावना उज्वल मन की
ना उसको कमी रहे धनकी उसे बिन मांगे मिलता ॥३॥

रखे ना द्वेष कभी दिलमें गरीब हो या अमीर कोई
सबको समान माने वो समदृष्टा कहलाता है ॥४॥

सच्ची नीति जिसके पास उसकी ही जीत होती
जगत में जाये जिस कोने में कहींना हार सकता है ॥५॥

कहे जैराम अपनाया इस मार्ग को जिस नर ने
धन्य है वो ही, इस जगमे मरकर अमर रहता है ॥६॥

भजन क्र. ४५ (जो बुरे राहोंपे चलता है...)

(तर्ज :- अगर है ज्ञान को पाना)

जो बुरे राहोंपे चलता है, जीवित मरा कहलाता है ।।धृ॥

कितना भीं होवे धनी-ज्ञानी बुरा जगतमें कहलाता है ।
अपने को समझे अच्छा करे न कदर कोई उसकी ॥१॥

वानीपर सत्य ना जिसके वो नालायक कहलाता है
दौडता धनके पीछे वो छल कपटी कहलाता है ॥२॥

मींठी बाते बताकर वो भोले जनोंको ठगता है
भरोसा नही फंसाये कब और किसका प्राण लेता है ॥३॥

भरोसा नही करना इनका, नही तो धोका होता है
सबूत कितने मिलते है वेदोमें भी यह लिखा है ॥४॥

कहे जैराम गुण ऐसे जिस नर के पास में है
सुख ना मिलता कभी उनसे बनेतक दुःख ही मिलता है ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ४६ (ओ ऽऽ दुनियाँ के ...)

(तर्ज - दुनियाँ के रखवाले)

ओ ऽऽ दुनियाँ के बनानेवाले
मोरी बिगडी तू रे बना दे
मोरी बिगडी तू रे बना दे ॥धृ॥

तुमको खोजू भूला भटका, नांव लगा दे किनारे
दर्द भरी ये करूण कहानी, तुम बिन कौन सुन पाये
भगवान दे दे सहारा ऽ ऽ
किस्मत मेरी तेरे हाथ में, चाहे बनादे चाहे बिगाडे
हम जी रहे तेरे सहारे ॥१॥

देखूं चारों ओर पागल बनकर, चंदा बिन चकोर
वैसी गती हो रही मेरी, गोवर्धन गिरधारी
मनमंदिर सुना मेरा ऽ ऽ
बिना रोशनी दीपक नैंना, ज्योति से ज्योत जगा दे
तू सुरज हम तारे ॥२॥

घोर माया, अंधकार में खाऊं हरदम ठोकरे
जिया मोरा नित घबराय हिम्मत जाये हारी
लगे ना मन ये मोरा ऽ ऽ
ज्ञान ध्यान ये कुछ ना सुझे, कोई ना काम हो पूरा
घूम रहा हूं मारे मारे ॥४॥

आस धरी है मैंने तुझपर, चाहे मारे तारे
बनी बिगडी का तू ही सहारा तुम बिन कौन हमारे
जैराम द्वार खडा ऽ ऽ
भूले का है तू ही सहारा, रखियो लाज मोरी
ब्रीद सम्भाले ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ४७ (अरे, बुरी व्यसन में फँसी है...)

(तर्ज :- अवताराचे कार्य कराया)

अरे, बुरी व्यसन में फँसी है दुनिया
चरित्रवान कोई बनावे क्या ? ॥धृ॥

दिनों दिन बदल रहा है जमाना
व्यसन, फॅसनके पीछे जाये
धर्मनीति को कुछ न समझे
इससे भलाई होगी क्या ? ॥१॥

इमानदारी को बेचके खाये
बेईमानी को अपनाये
रहम किसीको किसीका नहीं है
इसमें शांती मिलेगी क्या ? ॥२॥

गुंडा गर्दी से करे गुजारा
दीन दुखियोंको नित्य सताये
खून चूसे ये फाँस डालकर
देश को सुखी करेंगे क्या ? ॥३॥

ऐसी नीति जिसने अपनाई
रहो ठुकराते उसे हरदम
साम, दाम, दंड, भेद को लेकर
सजा देने में हर्जा क्या ? ॥४॥

जैरामदास कहे जिस मे भाई
राष्ट्रहित की प्रीति है
उसी मार्ग को चलेंगे लेकर
राम राज्य में देरी क्या ? ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ४८ (इस देशकी जिम्मेदारी...)

(तर्ज : अवताराचे कार्य कराया वेळची अजूनी उरला का)

इस देशकी जिम्मेदारी हम तुम सबपर निर्भर है ॥धृ॥

बुढा हो या जवान कोई धैर्यसे काम करना होगा
तन मन धनसे हात बटाओ जिम्मेदारी सरपर है ॥१॥

जन्म लिया इस पवित्र भूमिपर ऋण इसका चुकाना है
वक्त आनेपर प्राण की बाजी दे वो ही शूरवीर है ॥२॥

परिवार समझो देश की जनता, न हो किसीको कोई कमी
मिल जूलकरके काम करे जो वही सच्चा दिलवर है ॥३॥

अमीर हो या गरीब कोई किसीपर अन्याय ना होवे
न्याय का शस्त्र हातमें लेकर न्याय बराबर देना है ॥४॥

जैरामदास कहे अब बैठनेका वक्त नही
द्वेषभाव को भूला करके कार्य निभाना हमको है ॥५॥

भजन क्र. ४९ (समाज सुखी तो देश सुखी...)

(तर्ज :- सब माँगनेवाले बैठे हे तुमरे दरबार मे बाबा)

समाज सुखी तो देश सुखी, समाज भूखा तो देश दुखी
एक एक समाजसे ग्राम बना
कई ग्रामोंसे यह देश बना ।
अच्छे बुरेका विचार न करे तो
मुसीबत आये कठिनाई की ॥१॥

बैठे कितने आलसमें, काम करने की फिक्र नही
बेकारी इनसे बढ गयी, नही फिकर उदर पोषणकी ॥२॥

दस कमाये पचास खाये आमद से जब खर्च बढा
आपस में जब झगडा बढा तो आई पारी रोने की ॥३॥

कितने को लगे व्यसन बुरे, कमाके दिनभर खावे ठोकरे ।
रोवे अन्न के लिए बीबी ये, ऐसी अकल इन शैतानों की ॥४॥

खुद बना जब यह कंगाल, घूसखोरीका डाले जाल ।
मेहनत वालोंका लुटे माल, टोली बनाकर गुंडोकी ॥५॥

इस बीमारीकी एक दवा, अब सत कर्म को पहिचान लो
स्वावलम्बी जीवन बना न सके, तो भूकमरी ना मिटनेकी
जैरामदास कहे जिसके लायक जो काम हो तुरंत सौपो
मुफ्तका खाने वालों को फल चखाओ करनीकी ॥६॥

भजन क्र. ५० (ये खिसकतीं उमर तेरी...)

(तर्ज :- वो बसंती पवन पागल)

ये खिसकतीं उमर तेरी, जाए बीते रे जाने न दे
ये खिसकती उमर तेरी ॥धृ॥

गममें समझे याद वही, याद न रही मिटने पर
होश जब आई, माया भरमाई, ध्यान नहीं मिटने पर
ऐसा खेल बना है,
न जाने कोई यह गति ॥१॥

दुनिया है ये मुशाफिर खाना, कौन कब जाय ना खबर
चिडियों का है रैन बसेरा, बैठे वो किस डालीपर
ना किसी का रात और दिन,
ना जाने कोई करमगति ॥२॥

सत्ता सबपर है, बो निर्भर, चलेगी पलभर यहाँ किसकी
हिलता नहीं, पत्ता भी यहांपर, सब है निर्भर विधाता पर
कहता जैराम, भूल न तू,
राम इसमें मिले सुगति ॥३॥

■ ■ ■

भजन क्र. ५१ (मेरे भारत के किसान...)

(तर्ज :- तेले दिलका मकान सैया बडा आलीशान)

मेरे भारत के किसान तेरे भरोसे सब की जान
अब कहना मेरा मान, हो जा देशपर कुर्बान ॥धृ॥

करले तन मन से मेहनत कर ले खेती मे उन्नती
भू में छिपे है हिरे मोर्ती, चुनने को कर तू युक्ति
दे दे मेरी बातपर ध्यान, जगमें बढेगी तेरी शान ॥१॥

मुर्झाई कली खिल उठेगी, हरयाली चारों ओर दिखेगी
शांति सब जीवो को मिलेगी, कोयल पपीहा गीत बोलेंगे
मिटेगा क्लेश ये तमाम, सुख से बितेगा जीवन ॥२॥

देश भक्त ऋषिमुनि पलते तेरे भरोसे ज्ञानी
तूही सबका चक्रपाणी, तेरे हात में जिंदगानी
तूही जीव का जीवन प्राण, जय जवान, जय किसान ॥३॥

नीति नियम्र पास में रखकर, चलना कर्म अपने परखकर
जब जिम्मेदारी तेरे उपर, कहे जैरामदास समझकर
पग धर रखकर ज्ञान, सच्चा लगाने निदान ॥४॥

भजन क्र. ५२ (सच्चे सेवक कहलाते...)

(तर्ज :- सच्चे सेवक बनेंगे जब हम)

सच्चे सेवक कहलाते, दीन दुखियों को देते साथ
अज्ञानता में डूबी जनता के लिए, बढाते अपना हात ॥धृ॥

उनकी मुसीबत आप उठावे
कष्ठ कितने भी होते रहे

धैर्य कभी भी वो ना छोडे
प्राण की बाजी लगा देवे
ढ़लने ना देवे प्रणको अपनें
झूठी करे ना कभी वो बात ॥१॥

बनी रहे वो चिंता उसको
देश धर्म का मनमें हित
खाना पीना कुछ ना सुहावे
सब जीवों से जोडे प्रीत
रहिना फिक्र जड कायाकी
इंद्रियोंपे करली मात ॥२॥

परधन को वो पत्थर समझे
पर नारी को माता
दुःख सुखको समान माने
समदृष्टा कहलाता
सत्यधर्म पर अटल रहकर
आत्म हितकी करते बातें ॥३॥

जैरामदास कहे गूण ऐसे
होते है जिस नकके पास
वोही उद्धारक है समाज का
धन द्रव्य की रखे ना आस
भजन ही उसका धर्म बन गया
जीवित रहकर मुक्त कहलाता ॥४॥

■ ■ ■

भजन क्र. ५३ (बिगडे कर्म के वो ना चले...)

(तर्ज :- चल उड जारे पंछी)

बिगडे कर्म के वो ना चले
उससे तो जाति के पिछडे भले ॥धृ॥

ज्ञान मान का कितना बडा हो
नीति नियम ना सुधरे
अपना बडप्पन जगको बतावे
दुर्गुण उसमें भरे रे
आप सुधरे ना, जगको सुधारे ऽ ऽ
कैसी शांति मिले ॥१॥

गरीबों के आसुओं से
धन का संग्रह किया
वक्त पडे तो दीन दुखियों के
कभी काम ना आया
कैसे इसको ऽऽ धनी कहोगे
दुख पराया भूले ॥२॥

भेष बनाके साधू कहलाये
त्याग के गुणना अंगमें
मन तो इसका भटकते रहता
विषयों के भोगन में
काम क्रोध ये ऽऽ खडे है सरपर
कैसे ब्रीद संभाले ॥३॥

जैरामदास कहे अंगमें सत्यव्रत ही बाना
पढे लिखेसे अनपढ़ अच्छे, ऊँचे विचारोंसे चलना
वोही मानव मुझको भाये, पीरपराई कह दे ॥४॥

■ ■ ■

भजन क्र. ५४ (ग्राम यही मंदिर मेरा...)

(तर्ज :- मुझे प्यारा भारत मेरा)

ग्राम यही मंदिर मेरा । नरनारी शंकर गौरा हो ।
सुविचार के फुल चढाऊं । प्रेम देकर प्रेम लेऊं ।
यही अस्तित्व हमारा ॥१॥

ज्ञान खराटा हाथ में लेकर
उज्वलता लाऊं कूटनीतिपर
साफ करूं षड़विकार कचरा ॥२॥

विवेक मशाल चेतन करके,
भेदभाव अंधकार मिटाके
फैलाऊं उजियारा ॥३॥

मन के भाव निर्मल बनाकर
सभी आत्मा एक मानकर
देखूं ब्रम्ह जोत उजियारा रे ॥४॥

जैरामदास कहे सुनो भाई
मानवता मार्ग ये सही
परख से नाव लग किनारे ॥५॥

भजन क्र. ५५ (मेरा प्यारा किसान...)

(तर्ज - तेरा प्यारा है नाम)

मेरा प्यारा किसान मेरा प्यारा किसान
लोग जगते तमाम रखे भारत की शान ॥धृ॥

तन मन से खेती में करता वो काम
खाये ना फुकटमें किसीका छदाम
अपने ही मेहनत पर करे गुजरान ॥१॥

मन में न किसी की ईर्ष्या है इसकों
किसीके कामोंसे, मतलब ना इसको
देखे न किसीकी ओ ऊँची नीची शान ॥२॥

अपनेही धुन में मस्त वो रहता
खुद पलता और औरों को पालता
इसीके भरोसे पे लढते जवान ॥३॥

बैल इसके साथी लेवे उसकाही बल
क्रूर प्राणियोंका इसकों थोडा ना डर
नियम न इसको, करता रात दिन काम ॥४॥

कहता जैराम इसका सबपर एहसान
ना समझो इसको कोई है ये अज्ञान
यही राम और यही मेरा श्याम ॥५॥

भजन क्र. ५६ (गरीबों के अश्रुसे भर...)

(तर्ज :- सजना हमार मोटार कार लेके आयो)

गरीबों के अश्रुसे भर रही अमीरों की झोली रे
अमीरों की झोली २ ॥धृ॥

उनके ही कमाईसे, करे ये गुजारा २
उनकी ही पीर ऽ ऽ धनवान नहीं जाने रे ॥१॥

कमाते कमाते इनका, जर्जर होवे तन
दाने दाने के लिये ऽऽ हरदम ठोकर खाये रे ॥२॥

करे बैल, खावे घोडा मिले नहीं चारा
रहता है भूखा ऽऽ देना इनकी नही जान रे ॥३॥

अन्याय से गुजर रहे, इनके हर एक पल
तो भी निर्भय बनकर ऽऽ वो करता जिन्दगानी रे ॥४॥

कहता जैरामदास क्या कोई देवे साथ
जाने वही ईश्वर ऽऽ का बन्दा कहलाये रे ॥५॥

भजन क्र. ५७ (जिसका पद उसको ही सोहे रे ...)

(तर्ज :- ऐसा तो नहीं देखा हमने)

जिसका पद उसको ही सोहे रे
क्या जाने रे मति मंद उसे ॥धृ॥

सन्तों के उस परम सुख को
संत संग बिन कोई ना चीन्हे
चाहे वो कितने शास्त्र पढे
वो न उस मर्म को जाने
जैसे अन्धे को जग अंधा ही दिखे,
वैसाही उसके मनमें बसे ॥१॥

नींद लेवे पानी में मछली
उसके गति को कोई ना जाने
गर्भवती के सुख और दुखको
जिसने सहा वही पहिचाने
जायेगा जब उसके वंश में, वोही नर पा सके उसे ॥२॥

गरीबों के जिंदगी में जो मिले सजा
क्या जाने अमीर उसकी रे मजा
जो गुजरा है इस राहपर
उसने ही किया उनपर तो रजा ॥३॥

भक्त भगवान के इशारें
अभक्त उसको क्या जाने
जिसकी लगी है दिल में लगन
उसको ही सुख दुख समझे रे
कहे जैराम ये भक्ति की नशा
प्रभू के दिवानेने पायारे पहिचाने ॥४॥

■ ■ ■

भजन क्र. ५८ (आनंद तो उसको है मिलता...)

(तर्ज :- तेरे सामने वाली खिडकी में)

आनंद तो उसको है मिलता, है जिसने ईश्वर को वशमें किया
छोडकर सारी उलझने, हरी के भजन में मग्न भया ॥धृ॥

कमतरता न उसको जगमें रही, कभी खाली हाथ नहीं आये वो
निरखे नित झांकी नयनोंसे, उसमे ही सब कुछ पाये वो ।
भक्ति की नशा जब चढ जाये, मस्ती न गगन में समाये ॥१॥

हिंमत क्या सामने आ करके, कोई उनसे बकवास करे
गम रहेना उसको थोडी भी, इस तनकी वो चिंता न करे
पिया जिसने ब्रम्हरस प्याला, संकटसे ना वो घबराया ॥२॥

मर्म क्या है इस भक्तिका, जाकर के भलोंसे पुछो
अनुभव इस मार्गका जिसने लिया, जाके वर्म उनसे पूछो
आत्माका खेल निराला है, जाने वो ज्ञानी कहलाया ॥३॥

जैरामदास कहे श्रद्धा रखकर, निष्काम कर्म करते रहो
उज्वल बनाके भावना, ज्ञान सागर में नहाते रहो
तोड करके जन्म मरण फेरे, ब्रम्हपद को उसने पाया ॥४॥

भजन क्र. ५९ (भक्तोंके रखवाले अब तू ...)

(तर्ज :- बंसीके बजानेवाले तेरी बंसी बजा दे)

भक्तोंके रखवाले अब तू धर्म को बचाले
बचाले, बचाले अब तू धर्म को बचाले
ये भूली हुई जनता सत् मार्ग दिखा दे ॥धृ॥

कितनी ही अबलाओंका शील भंग हो रहा
गुंडा, गर्दी मे रातदिन समाज नीचे जा रहा
ये आया तूफान, इससे सबको बचाले ॥१॥

जहाँ, वहाँ आज देखो हो रहा है अत्याचार
आज मानव नहीं करता है, पाप पुण्य का बिचार
इस बिगडी हुई रवैया से, मनको हटाले ॥२॥

अपने स्वार्थ के कारण कितनों के लिए प्राण
कितनों के घरद्वार उजाडे और कितने हुये हैरान
ऐसे बिगडे दिलवालों को सच्चा सबक सिखादे ॥३॥

कितने निकम्मे पल रहे है देशमें बैठकर
यही एक कारण है, भूखमरी छायी सिरपर
इनमें तो काम करने की, वृत्ति जगा दे ॥४॥

कहता है 'जैराम' दयालू है तेरा नाम
हर संकटसे तूने छुडाया, किया भक्तों का काम
मुरली की तान सुनाकर, सबको शांति दिला दे ॥५॥

भजन क्र. ६० (नेता बिगडा है, गाँव...)

(तर्ज :- चांद मेरे आजारे)

नेता बिगडा है, गाँव में झगडा है
रहेना चैनसे, जनता के धन से
स्वार्थ सुधारे रे ॥टेक॥

करे भूल भुलैय्या व्यवहार, झूठ मूठका फांसा डाले,
अपना ही रंग बनावे ऐसी कूट नीति की चाले
ऐसा तमाशा है ऽऽ नटखट की चाल, डाले वो जाल
दुनियाँ लुबाडे रे ॥१॥

बीच दलाल ये बन जाये, आपस में झगडे लगावे
फैंलावे फूट की दरारे, प्रेम भाव में बाधा लावे
ऐसा तो ज्ञानी है ऽऽ करे मनमानी, लोगोंकी हानी
कैंसी अनीति रे ॥२॥

जुआ सट्टा और शराब, हुआ इसीसे येतो खराब
बतलावे अपना रूवाब, ऐसे भरे है इसमें ऐब
भूला है धर्म नीति ऽऽ सच्चाई छोडे प्रीति की मोडे
विषयों में गडारे ॥३॥

कहता है जैरामदास, किया इसने समाज का नाश
कैसा करे ये विकास, नही खुद को इसका भास
गति नही बदले बिन ऽऽ धर्म बचाये,
नीति सिखाने, सेवक हो त्यागी रे ॥४॥

भजन क्र. ६१ (मन के भाव उज्वल करके...)

(तर्ज :- अवताराचे कार्य कराया)

मन के भाव उज्वल करके, नामस्मरण करते जा
आत्मा को साक्षी रखकर, आत्मचिंतन करते जा ॥टेक॥

ध्यान धारणा न्याय से, मुलाधार के गणपती को पूजते जा
सोहम् नाम का उच्चारण कर विरूद्ध दिशासे जीवको मिलाते जा ॥१॥

ध्यानी ध्याता तू ही बनकर, लक्षसे अलक्ष में जाते जा
बेगम सुरता ताल लगाकर, गुरू को अन्दर पाते जा ॥२॥

अखंड ज्योति जल रही निरंजन पुरमें, जीव को शिव में मिलाते जा
जैरामदास कहे बिना गुरूकृपासे , ये अनुभव किसने नही पाया ॥३॥

भजन क्र. ६२ (कितना प्यारा मेरा वतन...)

(तर्ज :- आपसे हमको बिछडे हुये)

कितना प्यारा मेरा वतन, इसके लिए दे तन, मन, धन
सच्चा सेवक तूरे जा बन निभाते जा तू अपना पण ॥टेक॥

निर्भय बनकर कर्म किये जा, हर संकटसे तू जूझते जा
पाप कर्म से तू डरते जा, सत्कर्मो में तू मरते जा
दृढ़ भावना हितमें धर, मातृभूमि की करने जतन ॥१॥

सब कुछ ईश्वर का तू समझले, मेरा कुछ नहीं मनमें धरले
कर्म फलको अपर्ण कर दे, इच्छा मत कर फल पाने की
जो मिलता है गुजर करो, काम न आये पराया धन ॥२॥

जन्म लेकर आया तू भूपर, चलते जा तू नीति परखकर
दया धर्मका मार्ग धरकर, पीर पराई अपनी कहकर
कहे जैराम हिलमिल के, करना है हमें सुखी जीवन ॥३॥

भजन क्र. ६३ (घुली घुली जा रही उमरीयाँ...)

(तर्ज :- जारी जारी ओ कारी बदरीया)

घुली घुली जा रही उमरीयाँ, परखे नही वो तू सांवरिया
नाहक जीवन मुफ्त गमाया, समय का ज्ञान तू नही किया ॥टेक॥

कितने दिन बिताये है तूने, बुरे कामों में तू नही जाने
समय खोया अनमोल, किया उसका ना मोल
सारे श्वास तूने गमाया ॥१॥

अच्छे कामों में मन नही तेरा, मैं तू पन में ही रे जाये तू घेरा
बांधी आशा की डोर, पाप किया तूने घोर,
पुण्य को नही तूने बचाया ॥२॥

कर रहा तू शैतान जैसा, दिल में आये तो करता है वैसा
तनिक नही शरम, तेरा तुझको न गम
ऐसा झूठा है तेरा रवैया ॥३॥

उमर बिताई अजगर जैसी, जीवित रहकर भी मृत जैसी
कहता जैरामदास, किया अपनाही नाश
व्यर्थ पृथ्वीपर जन्म तूने लिया ॥४॥

भजन क्र. ६४ (कहता है तू मेरी रे खेती...)

(तर्ज : जारी जारी वो कारी बदरियाँ)

कहता है तू मेरी रे खेती, तूने उसे कभी नही जोती
कैंसी करे वो तुमसे प्रीति,
कर्म करने की नही हस्ती ॥टेक॥

याद है तुम्हे गप्पे लगाना, मर्म किसानी का नहीं जाना
इसमें किसका भला, कौन देगा सल्ला
नेक काम मे नही तेरी वृत्ति ॥१॥

तनसे ना किया इसकी सेवा, मनमें नही है प्रेम भावना
देवे कैसे मेवा, है बैरंग दिखाया
नही है रे तुझमें सच्ची नीति ॥२॥

पराधीनता में बिताया जीवन, स्वप्न में न सुख मिले एक क्षण
समझ लेरे तू बात, छोड झूठा बकवाद
कर्म को मान्यता दी जाती ॥३॥

कई दिन तेरे अच्छे है बिते, अब ना चलेगी ऐसी ये बाते
कहता है जैराम, कर्म से बढे नाम
छोड़ देरे तू झूठी ये भ्रांति ॥४॥

भजन क्र. ६५ (हर वक्त तुम्हारे लिए...)

(तर्ज :- कई मानों भारत बासिन्दों)

हर वक्त तुम्हारे लिए, दौडके करते है काम,
पर वक्त निकल जाने पर तुम हमको करते बदनाम ॥टेक॥

दया करूणा है बचपनसे, दिल में प्रेम जगा दिन दुःखियों से
इनके लिए मैं घिसता रहूं, उसमें ही मिले विश्राम ॥१॥

वेदशास्त्र में लिखी है वानी, बतलाते है ऋषि मुनि
पर उपकार सरीखा पुण्य नही, प्रण किया कर्म निष्काम ॥२॥

स्वार्थी जन अफवाह फैलाये, कितने अडंगे राहों मे आये
धन लुटकर ये जनतासे, अब बन गया है धनवान ॥३॥

कहाँ तक इनकी सच झूठ बानी, सुनकर आता नैनों में पानी
इन पाखण्डी गुण्डे, लोफरोंने, किया जर्जर जीवन तमाम ॥४॥

भोला स्वभाव देख के मेरा, दुराचारी ने डाला घेरा
विश्वास देकर विश्वासघात किया लगाते रहे इल्जाम ॥५॥

भजन क्र. ६६ (मानो कहना मेरा भाईयों...)

(तर्ज :- कही मानो भारत वासियों)

मानो कहना मेरा भाईयों, आलस में न किसीकी भलाई
कैंसे भाग्य उजले होंगे तुम देखो न अपनी भलाई ॥धृ॥

झूठमूठ की संगत लेकर
बकवास करते है गप्पे लगाकर
कुछ विचार ना करते मनमे, रखते दिलमें कुटिलाई ॥१॥

पर कमाई पर तुम्हारी नजर
फांस डालकर करते उनको जर्जर
खुदका भविष्य तुमने देखा नही, दुसरों को बताते भाई ॥२॥

सत्यका नहीं तथ्य जुबामें
जीवन खोते झूठी बानी में
कागज की लेकर तलवार, झूठी ये करते लढाई ॥३॥

जैराम कहे आप सुधरो
जग को सुधारनेकी कोशिश करो
तब कीर्ति रहे अमर तुम्हारी, कामों मे लाओ सच्चाई ॥४॥

भजन क्र. ६७ (गांव में घूमे निठल्ला...)

(तर्ज : गेला हरि कुण्या गावा)

गांव में घूमे निठल्ला, लगे आलस इसको प्यारा
भरावे नकटों का मेला
पिये प्याला, शराब में मतवाला ॥टेक॥

लाज शरम इसको ना किसकी, फिक्र ना रहीं इसको घरकी
बुरी बात बकते वो चला -२
करे वो झगडा, सुध देह की भूला ॥१॥

गुजारा करता लपझप से, रखता मतलब स्वार्थ से
डालकर चंगुल का घेरा,
फसावे, भोला, दया धर्म को भूला ॥२॥

आज यही चल रहा है हाल, कोई ना देते इस पर ख्याल
दिनों दिन बढ रहा अत्याचार
सच्चा जाये, आज यहाँ पर कुचला ॥३॥

इसको ना रोके जो कोई, समाज की हानि होगी भाई
कहे जैराम जागो भाई,
बुरे कामों में, होता न किसी का भला ॥४॥

भजन क्र. ६८ (सुनो जन की, करो मन की...)

(तर्ज : सुन चम्पा सुन तारा)

सुनो जन की, करो मन की, जिसने समझा वोही तरा
अरें बडा मजा आये, सुने आत्मा की ये बात
सही मानो कही, वही आये तेरे साथ ॥टेक॥

जिसने धर्म नीति पाला, उसका प्रभू है रखवाला
निर्भय हुआ, पाई दुआ, वही सबका प्यारा ॥१॥

सबमें रहकर वो निराला, कीचड से कमल जैसे निकला
जल न ठहरा, रहा कोरा गंगा का पथरा ॥२॥

सबको गले वो लगावे, प्यार देवे प्यार लेवे
रखे रहम, सुखी जीवन, सबके नैनो का वो तारा ॥३॥

कहे जैराम करो विचार, मन से ही पार होगा संसार
इन्द्रियों पे, काबू करले, वोही हूआ भवपारा ॥४॥

भजन क्र. ६९ (व्रजपाल दयालू श्याम मुझे...)

(तर्ज :- नंदलाल गोपाल दया करके)

व्रजपाल दयालू श्याम मुझे, अब अपना दास बनाले मुझे
जीससे ही मेरी प्यास बुझे -२
यही बिनती करता आज तुझे ॥धृ॥

इस जगतकी ऽऽ झंझटमें
बह रहा हूं मै आज यहाँ
इस डूबती हुई ये नैयाको -२
दे दे तू सहारा आज मुझे ॥१॥

तेरें बिना ठिकाना नहीं
तुम दौडके हात बढ़ा दो हरि
गोते लगाते जिया तडपे, त्रिताप की आग यहाँ भडके
इस ज्वाला से तू बचाले मुझे ॥२॥

चल रही आंधी चारों ओर
भृंगकीडा बतावे अपना जोर
इन जीवन कलिओंके उपर २
काल भंवरा हरदम गूंजे ॥३॥

राहों में खडे है क्रूर प्राणी
हरवक्त ये पहुंचावे हानि

इससे मनमें आवे ग्लानी २
धैर्य देकर अब तुम बचा लो मुझे ॥४॥

कहे जैराम दयालू नाम
सब जीवोंका तू विश्राम
तेरे आज्ञा बिन होवे नही काम २
मेरी आस पूरी अब तुम करदो ॥५॥

भजन क्र. ७० (मोहे जग से है राम प्यारा...)

(तर्ज : कोणा सांगावी कर्म कहानी)

मोहे जग से है राम प्यारा, कोई उसको मिलन हारा हो
तोहे किसका है ये बल प्यारा, छोडेना तू उसका सहारा हो ॥धृ॥

जिसने सुख दुःख में साथ दिया, वोही तेरा सब कुछ बन गया
वोही तेरा है तारन हारा ॥१॥

उसकी बानीं पर रख तू भरोसा, झुठ जगत की छोडदे आशा
वो ही डूबते का एक किनारा ॥२॥

औरो के लिये होगा वह बुरा, हमको विपत्ति में उसने उबारा
वो ही श्याम हमारा है प्यारा ॥३॥

दिलों जान से हम डटे रहेंगे, वक्त आने पर हम प्राण भी देंगे
यही प्रण है दृढ़ हमारा ॥४॥

कहे जैराम अपनायी नीति, जन्म जन्म की जुड गई प्रीति
कौन उसका बिगाडन हारा ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ७१ (अब काहेको खलबल करते हो...)

(तर्ज :- अब काहेको धूम मचाते हो)

अब काहेको खलबल करते हो, दुष्ट भावना धरकर
आवेंगे पूछने गिरिधर ॥टेक॥

कबतक छुपेंगे पाप तुम्हारे, एक दिन होगा खुलना
जो जो करोगे वो वो भरोगे, थोडी रही है कसर ॥१॥

कितने जींव त्राही त्राही किये, रहम न रखी दिलमें
पाप पुण्य का विचार न किया, हिंसा का मचाया कहर ॥२॥

दीन दुखियों और भोले जनपर, जाल का डाले फाँसा
चक्रव्यूह का खेल रचकर, पाप लादते हो सरपर ॥३॥

घूसखोरी और कालाबाजार, इसमें ही मौज उडाते
ठगानेमें ही जीवन बिताये, परधन पर रहे निर्भर ॥४॥

जैरामदास कहे अब जागो, दुष्ट कर्म भूल जाओ
आगे सरपर काल खडा है, जावे तुम्हे निगलकर ॥५॥

भजन क्र. ७२ (मेरे दिल की धडकन ...)

(तर्ज :- जब प्यार किया तो डरना क्या)

मेरे दिल की धडकन समझ ना पाया
अब तो इसको परखने वाला, मिला नहीं कोई मन का साया ॥धृ॥

खिल उठी थी कलियाँ जो मेरी
मृगकीडे ने डाली इसपर घेरी
मुरझा गया है जियरा मेरा
मनकी मुराद कोई ना मिटाया ॥१॥

दिन रात ये तो चिंता सताती
भांति भांति की तरंगे उठती

कोई ना इसे देवे पानी,
सुखी चमन की ये डालियाँ ।।२।।

चली खिसकती इसकी ये दशा
रही ना थोडी मन मे ये आशा
रखा भरोसा एक जगदीशा
की अर्पण मैंने अपनी काया ।।३।।

कहे जैराम दृढ भाव रखा
मार्ग अपनाया मैंने सेवा का
ईश्वर रूप मैं सभी में देखू
निष्काम कर्म को हाथों में लिया ।।४।।

भजन क्र. ७३ (मत भूल रे ज्ञान ले...)

(तर्ज :- हमभी है तुमभी हो दोनों है आमने सामने)

मत भूल रे ज्ञान ले, तन मनसे स्वहित साधले
समझले देशहित मेरा, उसीमेंही सबकुछ है भरा
जीवनका वही है किनारा, जीना मरना फर्ज है हमारा ।
भावना तू रखले ।।१।। तन मन..

सारी जिम्मेदारी हंमतुम पर, कोई किसीकी ना रखे कसर
दृढ़भाव मनमें तू रखकर, चलते जा कर्मं को परखकर
भलाई उसमें मिले ।।२।। तन मन..

रखो सत्य भावनाको दिलमें, देखोना बुराई सपनोंमें
देरी ना करो सत्य काममें, धरो पीर अपने मनमें
ये वचन ना भूले ।।३।। तन मन..

देशभक्त राष्ट्रपिता गांधी, बेडी तोडी मिलाई आजादी
करदी दुराचारी की बर्बादी, स्वराज्यकी झांकी दिखलादी
स्वाभिमान तू रखले ।।४।। तन मन..

कहे जैरामदास जागो भाई, अज्ञानतामें किसकी न भलाई
सत्य अहिंसा को अपनाई, नैया उसीकी पार हुई
प्रेम दे प्रेम ले ॥५॥ तन मन..

भजन क्र. ७४ (अब वक्त नहीं है मेरे पास...)

(तर्ज :- कही मानों भारत वासीन्दों)

अब वक्त नहीं है मेरे पास, बेकार बात करने का
फजूल बाते हमसे करते हो, जिसमें तथ्य नही है सत् का ॥टेक॥

तुम्हारे संग हम व्यर्थ बैठकर अपना जीवन क्यों खोयेंगे
जीवन उज्वल अपना करेंगे, साधुसंतो के ज्ञान धरेंगे ।
काम में राम को पायेंगे, जहाँ झांकी भरी है ईश्वरकी ॥१॥

अलाल तुम हो धूर्त पाखंडी ऐसे ही हमको हो संगी
चाल तुम्हारी है दुरगी सत्य बानी की है तुममे तंगी
स्वारथ में तुम डूबे हो, बाते करते मतलब की ॥२॥

चुगली चहाडी का तुम्हारा धंदा, डालते रहते जीवो पर फंदा
ऐसा तुम्हारा मन है गंदा, किया तुमने अपना चेन्दा
हमें भी बनाना चाहते हो, कैसे आये तुम्हारी झाँसी ॥३॥

जैरामदास कहे एक एक पल है बडा सबसे अनमोल
क्यो करेंगे इसको गोल, प्रभुका करने आयेंगे मोल
नहीं इस मारग को समझे तो, आये पारी रोने की ॥४॥

भजन क्र. ७५ (जानू ना मै पूजा अर्चा...)

(तर्ज :- तेरे द्वार खडा एक जोगी)

जानू ना मै पूजा अर्चा, दे दो दर्शन गजानना
द्वार भिकारी आया तेरे द्वार भिकारी आया ॥धृ॥

माया से मैं, मुख मोडा, तेरी आस लेकर दौडा

कौन करे उद्धार हो -२
मजधार नैय्या मेरी बीच भंवर में अडी
कौन करेगा पार हो ॥१॥

कितनों का संकट टाला जिसने तेरा नाम उच्चारा,
दिया तूने आधार हो ऽऽ २
मुझे नही कुछ भक्ति शक्ति, कैसी जोडूं तुमसे प्रीति
कौन सुने पुकार हो ॥२॥

बुद्धि का तू ही है दाता, सबका ही कर्ता हर्ता
त्रिलोकी सरदार हो ऽऽ २
ब्रम्हा विष्णु पुजा करे, भोले शंकर ध्यान धरे
तू है गौरी कुमार हो ऽऽ ॥३॥

कहे जैरामदास तुमबिन मैं उदास
सब छोडके आया दरबार
करजोड बिनती करूं तुम दीनोंके दयालू
सुन लो मेरी पुकार ॥४॥

भजन क्र. ७६ (कैसा अकडते, अकडते ...)

(तर्ज :- अरे रिकामा कशाला फिरतो रे)

कैसा अकडते, अकडते चलता रे
थोडी अक्कल ना दिल में धरता रे, बाबा धरता
जवानीकी नशा तेरे सिर पर
मारे ताने क्रोध के बलपर
जाये उमर तेरी जब ढलकर
फिर पछताये बुरे कर्मोपर
क्यो घमंड में तू भूलता रे ॥१॥

चढ़ी बढ़ी बात तू करता
पाप पुण्य को थोडा ना डरता
गुंडागिरी से तू पेट भरता
पर स्त्री पर नजर उठाता
दीन्न दुःखियों को कैंसा तू छलता रे ॥२॥

जरा नही तेरे पास नेकी
भावना है तेरी बुरे नीतिकी
बात करता चुगली चहाडीकी
लाज शरम नहीं पुरखों की
बदनामी में क्यो बिकता रे ॥३॥

जैराम कहे दो दिनकी ये नशा
उमर ढले फिर करे कैसा
नही तनका थोडा भी भरोसा
कब उड जायेंगा तेरा हंसा
फिर समय क्यों खोता रे ॥४॥

भजन क्र. ७७ (बातों का बनाना छोड दे...)

(तर्ज :- बन्सी का बजाना छोड दे)

बातों का बनाना छोड दे, अब देखले खेती बाडी
आलस को तू रे छोड दे, काम करने की, कर तैयारी ॥धृ॥

सारा समय तूने मुफ्त में खोया, सच्चे काम में हाथ न बटाया
पर जीवों पर दया न किया, नाहक जन्म तूने रे लिया
मै तू पन में खोई तूने रे, अपनी उमर सारी ॥१॥

किसान कहता अपने को तू , कर्तव्य अपने देखे नही तू
राखे नहीं कभी खेती को तू , डींग हाँकते रहता है तू ।
जब करो तबही बतलावोजी, तब होगी इज्जत तुम्हारी ॥२॥

काम में ही नाम मिलारे, जिसने जैसा काम किया रे
अपने मन में जिसने बिठाया, वहीं उसकी बनगयी छाया रे
दी गई प्रधानता कर्म को क्या जाने, वो मुर्ख अनाडी ॥३॥

खुद करो और दुसरोंको बताओ, ऐसा ही पाठ सबको सिखावो
आप जगो और दुसरोंको जगाओ, ऐसी भावना मनमें बिठावो
जैरामदास कहे रे भाई, उसमें ही इज्जत तुम्हारी ॥४॥

भजन क्र. ७८ (पहिले अपने मनको सुधारे...)

(तर्ज :- मेरे नैंनो में भरी जलधारा)

पहिले अपने मनको सुधारे, फिर संग तू हमसे करले ॥धृ॥

जुडगयी है तेरी मेरी प्रीति
नैनोंसे नैनोंकी ज्योति
तत्व में तत्व मिलाले ॥१॥

जब व्यवहार तुम्हारा सच्चा
हम सलुक करेंगे अच्छा
तब तुमसे प्रेम से बोले ॥२॥

स्वार्थ भाव तूम्हारे मन में
हम न रहे उनके संगमें
हमरी तुमरी नहीं चले ॥३॥

हम दिलदार के है साथी
उनसे ही करे हम दोस्ती
उस धुन में नित्य डोले ॥४॥

जैराम है प्रेमका भूखा
उसमें ही सदा रहे झुका
हमको कोई आजमालो ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ७९ (मन करे सदा सैतानी अटपटी...)

(तर्ज :- मेरे नैनों में भरी जलधारा)

मन करे सदा सैतानी अटपटी चलावे बाजी ॥धृ॥

किसी ने नही इसको जाना
बिरले ने ही इसको पहिचाना
हर वक्त करे तुफानी ॥१॥

इसकी चाल बडी दुरंगी
अच्छा बनता है फिरंगी
जीवन की करता हानि ॥२॥

इंद्रियोंका है नृपति
उनके उपर उसकी शक्ति
उसके आगे बढे ना ज्ञानी ॥३॥

इसकी तेज है रफ्तार
पवन की भी हुई है हार
इसकी गिनती किसीने ना जानी ॥४॥

जैराम कहे मन नारायण
येही करे सुखी जीवन
जब लगे धुंद रामनाम की ॥५॥

भजन क्र. ८० (ओ कमली वाले मुझे...)

(तर्ज :- बिगडी बनाने वाले बिगडी बनादे)

ओ कमली वाले मुझे, शांति तो दिला दे
आई हुई विपत्तिसे हम को बचाले ॥धृ॥

डोरी हमारी तेरे हाथ में है
चाहे रूलाँ दे चाहे हँसा दे ॥१॥

तूही भरा है डगर डगर में
चाहे गिरादे चाहे चढा दे ॥२॥

तेरी सत्ता है हर कण कण में
चाहे बसा दे चाहे उडा दे ॥३॥

तूही सभीका अंतर्यामी
चाहे भूला दे चाहे तरा दे ॥४॥

रूप अनेक सबका तू भूप
चाहे मिटा दे, चाहे बना दे ॥५॥

बीच भंवर में पडी है नैया
चाहे निभा दे चाहे डूबा दे ॥६॥

चाहे जैराम ओ बन्सीवाले
अपना स्वरूप मुझको दिखादे ॥७॥

भजन क्र. ८१ (गरीबीसे गुजरा प्राणी...)

(तर्ज :- सबके लिये खुला है मंदिर ये हमारा)

गरीबीसे गुजरा प्राणी, कैसी होती जिंदगानी
सुख दुःख वोही जाने, सबको समान माने ॥धृ॥

समझके खर्च करना
अपनी मेहनत से खाना
उधार न किसीका लेना
उसमे ही संतोष पाना
अटल रखे वो बानी मनमे ना भेद जानी ॥१॥

अपने कामसे मतलब रखे
किसीको न बुरा देखे
सबके विचार को परखे

वैसी ही बानी निरखे
सलूक करे वैसा उससे, होवे जैसा प्राणी ॥२॥

घमंड ना छूने पाये
सबको अपना बनाये
प्रेम को वो बहाये
सबको शांति दिलावे
नीति नियम पास लेकर बीतीं वोबी बखानी ॥३॥

जैराम कहे विपत्तिसे
दिन ये निकाला जिसने
वही नर अमीर होकर
गरीबों की लेता खबर
दिलावे उनको दिलासा, वही है सच्चा ज्ञानी ॥४॥

भजन क्र. ८२ (मुझमें ऐसी आदत बुरी...)

(तर्ज :- मै तो तुमसंग नैन मिलाके)

मुझमें ऐसी आदत बुरी, देखा ना जाय कसूर ॥धृ॥

झूठमूठ का जाल जो डाले, सहन ना होवे उनकी चाले
उसका मैं तो लेता सामना, चाहे जाये जान मेरी ॥१॥

दीन दुःखियों के दुःख देखकर, जावूं दौडकर मै तो वहाँपर
जो कुछ मुझसे बन सकता है, करूं मैं सेवा पूरी ॥२॥

ये लगन है मुझे बचपन से, देश धर्म में तन मेरा घिसे
रातदिन है यही एक चिंता, सब जीव होवे सुखी ॥३॥

इसमें भी कितने अडंगे आये कितनी, आपत्ति, दुख सहे
इसकी मुझको फिक़र ना कुछ भी, अपनाई मैंने फकीरी ॥४॥

विश्वास देकर दगाबाजी किये, तडप रही है आत्माकी आहे
करूणा कोई मेरी न सुन पाये, जाये पल, पल भारी ॥५॥

मतलब की ये दुनिया सारी, गरज निकलते ही करे बेइमानी
जैरामदास कहे विश्वास तेरा, नैया पार कर मेरी ॥६॥

भजन क्र. ८३ (कान्हा हमार ऽऽ...)

(तर्ज :- सजना हमार मोटार कार लेके)

कान्हा हमार ऽऽ
कान्हा हमार प्रण को, निभाते जइयो रे
निभाते जइयो श्यामा, निभाते जइयो ॥टेक॥

और तो हमको कुछ ना चाहिए
पल पल में ऽऽ दरस तो दिखाइयो रे ॥१॥

ना मांगू धन और, ना सोना चांदी
तुम्हारे ही धुन में ऽऽ दिन रात मै बिताऊं रे ॥२॥

समझेना और हमको, तेरी पूजा अर्चा
तोरीं ही सेवकाई ऽऽ हमको दीजियोरे ॥३॥

मैं हूं भूला भटका, कई जन्मों का
गोते खाता हूं यहाँ ऽऽ जिया तडपे रे ॥४॥

बाँह पकड कर, मुझे तुम उबारो
बहा जा रहा हूं यहाँ ऽऽ कृपा कीजियो रे ॥५॥

जैरामदास कहे प्रीतम प्यारों मेरो
केवट बनके ऽऽ नैया पार लगाईयो रे ॥६॥

■ ■ ■

भजन क्र. ८४ (हमतो बिक गये...)

(तर्ज :- सजना हमार मोटार कार)

हमतो बिक गये प्रेम के बाजार में
प्रेम के बाजार में संतो के संग में ॥टेक॥

कीमत हमारी, धनी न दे पावे
चाहे कितना धन ऽऽ हमपर वे लुटावे रे ॥१॥

प्यारी न लगे हमे, किसीकी मोटार गाडी
भाये हमारे दिल को ऽऽ पैंदल सवारी रे ॥२॥

खेती हमारी है, हरि के भजन की
उसी में हम ऽऽ अपनी जिन्दगी बिताये रे ॥३॥

कुछ भी ना लागे, पैंसा और कौडी
मुफ्त में बांटे धन ऽऽ जो कोई मांगे रे ॥४॥

राम नाम बेच कर, धन जो कमावे
उसीने राम को ऽऽ बदनाम किया रे ॥५॥

हमको लेना है तो, प्रेम पैंसा दे दो
फिर हमसे मन चाहा ऽऽ काम तुम करालो रे ॥६।

निष्काम जो हुये, वोही मर्म पाये
जैरामदास कहे, प्रभु उसे मिले रे ॥७॥

भजन क्र. ८५ (जब बड़ो का है बुरा हाल...)

(तर्ज :- आपसे हमको बिछडे हुये)

जब बड़ो का है बुरा हाल ।
छोटों की क्या सुधरे चाल ॥
झूठी बजावे नितदिन गाल, धर्म नीतिका नहीं है ख्याल ॥धृ॥

नीति नहीं है उनके मन में, ध्यान रखे वो नित पर धन में ।
भाव नहीं है सत कर्मो में, तथ्य नही है उनकी जुबामें ।
दुसरों का क्या करे उद्धार अनीति की है उसकी चाल ॥१॥

उमर बिताई बुरे व्यसन में, बाल पकाये झूठे कामों में ।
दया नही है इसके दिलमें, शांति न पाई किसी जगह में ।
शैतान जैसा भटकता रहे सिरपर नाचे उसके काल ॥२॥

बंदर जैसा स्वभाव इसका, यहाँ से वहाँ वो हे कुदता ।
ठहर न पाये एक ठिकाने, आनंद माने भटकने में ।
समय नही है भजन करने होशियार बनकर फैलावे जाल ॥३॥

जैंराम कहे ऐसे भूखोंको, पहले इनके मुंह पर थुको ।
हरदम इनको दूर ही रखो, बुराई बिन ना भलाई किसीकी
हर वक्त होशियार रहो, फसों न इनकी झूठी चाल ॥४॥

भजन क्र. ८६ (कोई चाहे तेरा कल्याण...)

(तर्ज :- मत भूल अरे इन्सान)

कोई चाहे तेरा कल्याण हो जा उसपे तू कुर्बान
इस में है तेरी शान, इन बातों पर दे थोडा ध्यान ॥टेक॥

सब कुछ उसको ही तू समझले
उसकी पीर को हरदम तू जानले
धैर्य देकर उसे ऽऽ लगाले गले
उसको कहा सच्चा इन्सान ॥१॥

तुने जब यहाँ पर नेकी किया
प्रभू बहायेगा तेरे लिए नदियाँ
सच समझले उसे ऽऽ छोड झूठी बाते
सुखी होगा तेरा रे जीवन ॥२॥

दिलवर को तू अपना दिल दे दे
पुरी करले रें अपनी सारी मुरादे
संगत नहीं छोड ऽऽ निभाले वादा
प्रेम के भूखे है भगवान ॥३॥

पापी मतलबी लोगों से बचके तू चल
उससे अपना व्यवहार दूर से ही कर
कब वह लादेगा ऽऽ तुझपर तुफान
इसपर रख थोडा तू रे ध्यान ॥४॥

कर्म भूमि पर जब हम आये यहाँ
काम क्रोध रूपी रीछ भालू जहाँ- तहाँ
सोच समझ के ऽऽ पग तू रे धर
समझाये तुझे जैराम ॥५॥

भजन क्र. ८७ (सच्चाई को तू रख इन्सान...)

(तर्ज :- मत भूल असे इन्सान)

सच्चाई को तू रख इन्सान
कहना मेरा तू मान, होगी विजय ये जान
देखे सच झूठ को भगवान ॥टेक॥

तेरी हर बात उससे ना छुपी यहाँ
हर घट की बाते वो तो समझ रहा
चालाकी तेरी ऽऽ नही चलने वाली
किस गर्व में भूला नादान ॥१॥

जिसने तुझको यहाँ पर जन्म दिया
खिला पिला के तुझको रे बडा किया
माता के गर्भ में ऽऽ जब तू उल्टा टँगा
किसने तोडा तेरा बन्धन ॥२॥

किसने दिया था तुझको रे वहाँ पर साथ
नहीं थे तेरे जब मुंह पाँव और हाथ
किसने पालन किया किसने दुध दिया
हो गया तू तो रे बेईमान ॥३॥

देख के ये जग तू भूल गया
मैं तू पने में सारा रे जीवन खोया
आगे की सुध ले ऽऽ राह झूठी तू छोड
तभी होगा तेरा कल्याण ॥४॥

ये नेकी करे तो नेक नाम मिले
बदी से चले तो बदनामी ले ले
कहता है जैराम ऽऽ कर मन में विचार
अच्छे बुरे की करले पहिचान ॥५॥

भजन क्र. ८८ (सुनरे छलिया ऽऽ मचाये ...)

(तर्ज :- सुनरी पवन, पवन पुरवैया)

सुनरे छलिया ऽऽ मचाये खलबलिया
कैंसा यहाँ पर फैलाया रवैया
देखे ना तू बुराईयाँ ॥टेक॥

मन में विचार भरे तेरे दुर्गुण के
भटकते तू फिरता है अन्धा बनके
बोलता है तू - हरदम झूठा, लबलब तू
मती तेरी मारी गई, सब छोडी नीतियाँ ॥१॥

सताते रहते हो तुम जीवों को
किसी की ना दया आवे कभी तुमको
मन है गंदा, होवे शरमिन्दा, कैसी सच्ची राह रूचे
तुम्हारे ये, दिलको तुम तो हो निर्दयी ॥२॥

हैवान जैसा व्यवहार तुम करते हो
नेकी बदी का विचार ना करते हो
कामक्रोध-वश में तुम होकर, बन्दर जैसा नाचते
हो रे गली गलीयों मे रे, ऐसी है तेरी बतियाँ ॥३॥

कबतक चलेगी तेरी मनमानी
एक दिन ढ़ल जायेगी ये जवानी
कहे जैराम, ओ मुरख तू सुनले
बुढ़ापे में रोयेगा, कहे क्या पाप किया
बुरी होगी गतियाँ ॥४॥

भजन क्र. ८९ (इस देश में रहने वालों ...)

(तर्ज :- शहीदोंके खूं का असर देख लेना)

इस देश में रहने वालों ऐ भाई
फुकट न खावो यहाँ की कमाई ॥टेक॥

किसीका ना भला यहाँ पर होगा
भोगना पडेगा नतीजा इसींका
काम धन्दा लेकर अपनालो मिताई ॥१॥

गुजारा करलो तुम अपने ही बलपर
हरदम ही चलते रहो सत के पथ पर
इससे ही है रे तुम्हारी भलाई ॥२॥

कन्धे से कन्धा मिलाकर के चलना
वादे को अपने निभाते ही रहना
भूलो ना कभी वो पीर पराई ॥३॥

निठल्ले लोफरों से बचकर के चलना
अच्छा सबक देके मजा चखाना
कभी ना करना सज्जनों की बुराई ॥४॥

कहता है जैराम कर्म पहिचानो
इसमें भरा है हित सच्चा जानो
भूलो न बाते जो तुमको बताई ॥५॥

भजन क्र. ९० (मेरा प्यारा वतन...)

(तर्ज :- तेरा प्यारा है नाम)

मेरा प्यारा वतन, मेरा प्यारा वतन
इसके लिए लगाऊं मै सारा तन, मन, धन ॥टेक॥

दुष्मन ने डाली कभी इसपर नजर
दिल जान से हम लेंगे उनकी खबर
लड़ते लड़ते हो जायेंगे कुर्बान ॥१॥

निगरानी करना ये फर्ज हमारा
पहरा देना यही मजहब हमारा
स्वाभिमान से जीना हमारी है शान ॥२॥

नस नस में भर देंगे वीरता का खून
बूढ़े से जवान तक को यहीं देंगे गुण
आयेगा संकट तो हम हो जायेंगे बलिदान ॥३॥

अपनायेंगे सत्य नीति होगी हमारी प्रगति
बन्धुत्व भावना से जोडेंगे प्रीति
मानव धर्म का सिखायेंगे ज्ञान ॥४॥

मातृभूमि पर जिसका सच्चा प्रेम है
मरम्टि जाने पर वो अमर रहे
कहता जैराम उसका रहेगा नाम ।।५॥

■ ■ ■

भजन क्र. ९१ (आइये प्रभु मन मन्दिर में...)

(तर्ज :- जागिये रघुनाथ कुँवर)

आइये प्रभु मन मन्दिर में
विनती सुन लीजिए ॥धृ॥

दिलका परदा खोल दियो
षड़रिपु को फेक दियो
क्या कम है हमरे में, हमे तो बताइये ॥१॥

शुद्ध मनके फूल जमाये
भाव भक्ति चावल लाये
सुविचार गन्धको, त्रिगुण थाली में सजाये ॥२॥

पंच प्राण ज्योति जलाऊँ
ज्ञान, धूप सुगन्ध लाऊँ
अबतो प्रभू पधारिये, मुझे ना बिसारिये ॥३॥

प्रेम अश्रु नीर लाया
हृदय कमल आसन बिछाया
मन कामना, जयराम को, पूर्ण तो कीजिए ॥४॥

भजन क्र. ९२ (जब आई काम करन...)

(तर्ज :- कहा मानो भारत वासियों)

जब आई काम करन की बात यहाँ
फिर समय हमारे पास कहाँ ॥धृ॥

मतलबी जब रहे मन में भावना, जम जम करके बैठकें रहना
खाना पीना और मौज उडाना
जब पैसा खर्च का समय आया
तो मुह छुपाये जहाँ तहाँ ॥१॥

फुकट का माने दूसरों का धन, गडाके अपना वहाँपर मन
लुटना चाहे मन ही मन ।
सच झूठका विचार ना करे, खोई है अकल तेरी कहाँ ॥२॥

अपने परसे तुम पराया देखो, भावना अपनी शुद्ध रखो
सच्चे काम से होवे ना दुःख
इस में ही भलाई है सबकी, बिरलाही इस नीति से रहा ॥३॥

ऐसी मतलबी है ये दुनिया, आवो न तुम इनकी दुनियाँ
नही तो भोगनी पडेगी आपत्तियाँ, सोच समझकर करो इनसे बतियां
जैराम कहे इन ठगोंसे, तुम बचके चलो जी भैया ॥४॥

भजन क्र. ९३ (सच्चे मन को जँचे...)

(तर्ज :- मेरे मन की गंगा और तेरे मनकी जमुना)

सच्चे मन को जँचे, लगे प्यारी उनकी बाते
देश काम में आते वोही, धर्म निभाते ॥टेक॥

उनके ही पुण्य प्रताप से चलता देशका कार्य यहाँ सारा
उनसे ही टिक रहा यहाँ पर, मानव धर्म ये हमारा
सब जीवों को शान्ति मिले, सुनकर के बाते ॥१॥

भेदभाव ना इनके मनमें, सबको अपनाही माने
भलाई होवे हर प्राणि की, तत्पर रहके निभाते
एक दुसरे में प्रीति जगावे, ऐसा सबक सिखाते ॥२॥

फूट की दरारे जहाँ पडी हो, एकता उनमें दर्शाये
मिल जुल करके, कैसे रहना, अमल मे नीति वो लावे
कंधे से ये कंधा जुडाके अपना कदम बढाते ॥३॥

जैरामदास कहे सुनो भाई, नेक काम है उनके पास
चिढ है इनको झूठे कर्म की, थोडी नही इन्हे बरदास्त
परहित को ये अपना समझे, आनन्द उसमें मनाते ॥४॥

भजन क्र. ९४ (तेरी यह माया...)

(तर्ज :- सुख के सब साथी)

तेरी यह माया, नही कोई जाने
हे राम, घनःश्याम, तेरा तुही जाने, हम है नादान ॥धृ॥

तेरे भरोसे पलती दुनिया
इस नैयाका तूरे खिवैया
फिर क्यों तूने भेद रखा है ऽऽ २
कर सबका कल्याण ॥१॥

तुमने ही हमको जीवन दिया
पालन पोषण का बोझ उठाया
अब क्यों करता आनाकानी ऽऽ २
तरस रहे कणकण ॥२॥

यहाँ दर दरपे ठोकर खाते
रहे नैनोंसे नीर बहाते
आवे नही क्या थोडी दया ऽऽ
कैसा किया भगवान ॥३॥

दया का सागर नाम तुम्हारा
क्यों न देते हमको सहारा
जैराम कहे विनती सुनले
दे मेरी बात पर ध्यान ॥४॥

भजन क्र. ९५ (मुझसे ऽऽ बोल कान्हा...)

(तर्ज :- सुख के सब साथी)

मुझसे ऽऽ बोल कान्हा ऽ भेद ना छुपाना
हमने ऽऽ तेरा ऽऽ कहना कब ना माना
बोल मेरे श्यामा ॥धृ॥

हम तो तेरे दरपर खडे
कबसे तेरी राह निहारे
कैसी न सुने पुकार हमारी ऽऽ २
कौन बसे तुम धाम ॥१॥

दया माया क्यों भूल गये हो
अब बहाने क्यों करते हो
क्यों न हमारी फिकर तुमको ऽऽ २
करना है क्या बदनाम ॥२॥

भटकता फिरता पाने तुमको
जंगल, दरियाँ, तीर्थ धामको
मंदिर में भी नहीं मिल पाये ऽऽ २
हो गया मैं हैरान ॥३॥

तरस, तरस कर चुप रह जावूं
अपनी बाते किसको बतावूं
समझावूं किसको तेरे बिना ऽऽ २
तूही बता दे राम ॥४॥

कबतक बैठू तेरे भरोसे
आशाओं के तार टुटे
धीरज सब मेरे मनके छूटें ऽऽ २
दर्शन दे दो जैराम ॥५॥

भजन क्र. ९६ (सत्य है जिसकी बानी...)

(तर्ज :- ऐसा है नाम तेरा)

सत्य है जिसकी बानी, ज्ञानी हो या अडानी
सबकी रखे निगरानी, उसमें ही है इन्सांनी ॥टेक॥

वो ही है प्यारा जगका, उजियारा सब जीवों का
घिसता रहे वो तन को, मन में ना अभिमानी ॥१॥

ऊँचे भाव दिल में रखकर, दुःखियों के दुःख देखकर
उसके मन को होवे ग्लानि, नैनो में आये पानी ॥२॥

शील नम्रता से बोले, नीति नियम से वो चले
प्रेम नाता वो निभावे, सबकी पीर उसने जानी ॥३॥

राष्ट्रहित उसकी भक्ति, इसमें ही पाये शान्ति
देश धर्म के लिए कर दे अपनी वो कुर्बानी ॥४॥

कहंता है जैरामदास, सत् पर रखे विश्वास
वचनों को नही बदले, येही उसकी है निशानी ॥५॥

भजन क्र. ९७ (करना है तो करजा...)

(तर्ज :- मार दिया जाय या छोड दिया जाय)

करना है तो करजा, भलाई का ये काम
रहेगा तेरा नाम मेरे यार जगमें
चलना है तो चलजा सत्य के धाम में ॥टेक॥

देख के चल तू नेकी बदी को, मिले सुख जहाँ पर सभीको
भाव दिलमें बिठा, सत् में हाथ बटा
दीन गरीबों के लग जा सेवा में ॥१॥

पुण्य नही पर-उपकार जैसा, उसमें मिले जीवन को दिलासा
पाया नर जन्म को, धरले सत् संगको
भला तेरा संतोकी बानी में ॥२॥

मन ही तेरा है अच्छा और बुरा,जाये जिस ओर दिखे वैसा सारा
काबु करले इसको, फिर कर काम को
रह मत कभी तू दुविधा में ॥३॥

कहता है जैराम दो राहे, जाये जिस पथ पे तैंसा ही पाये
सोच समझ के चल, फिर नही तुझे डर
इन बातों को रखले तू ध्यान में ॥४॥

भजन क्र. ९८ (सच्ची सेवा करे जो कोई...)

(तर्ज :- रामचंद्र कह गये सिया से)

सच्ची सेवा करे जो कोई, सत्युगी कहलायेगा
मरने पर भी अमर रहेगा, नाम काल नही खायेगा ॥टेक॥

अन्दर बाहर उजला मन का, द्वेश न रखे जीवों का
खुद पर से ही सबको जाने, तैयार रहे परहित करने
हर क्षण क्षण में साहस धरकर, संकटसे टकरायेगा ॥१॥

तन,मन,धन को न्यौछावर करके, समाज सेवा दिलमें ले
परख परख कर कदम वो रखे, सत् को ही हरदम देखे
निष्काम भावना दिलमें धरकर, समाज सेवक कहायेगा ॥२॥

लेके सहारा नेक नीति का, नाता निभावे प्रीति का
ज्ञान बोध की रश्मि देकर, मिटाये अज्ञान पल भरमें
वही सपूत है मातृ भूमिका, राष्ट्रहित को समझेगा ॥३॥

इन बातों को जो नर समझे, पुरी करे वो मुरांदे
भूलो ना तुम अपने वादे, नही तो पडोगे यम फन्दे
जैरामदास कहे ये वक्त, बार बार नहीं आयेगा ॥४॥

भजन क्र. ९९ (जब तू मातृभूमिका है प्यारा...)

(तर्ज :- कुणा सांगावी कर्म कहाणी)

जब तू मातृभूमिका है प्यारा
करदे अर्पन तन, मन सारा ॥धृ॥

मेरा नही है सब है ईश्वरका !
दास हूँ मैं सब जीवों का !!
पक्का भाव तू करले रे मन ऽऽ का, लग जायेगी नांव किनारा ॥१॥

आये संकट देश धर्मपर
सह ले तू अपने कंधो पर !!
जिम्मेदारी तू अपनी समझले तभी होगा तू देश सितारा ॥२॥

जहाँ करनी है जान की कुर्बानी
वहाँ रखना तू अटल बानी
कदम न हिचके तेरे पल ऽऽ धर लेते जा भगवान का सहारा ॥३॥

हिम्मत ना हारे न बिसरे नाम
इसमें ही तेरा है मोक्षधाम
दास जैराम को दिल से भाया, वोही है मेरा प्राणो से प्यारा ॥४॥

भजन क्र. १०० (आखिर तुम्हारे ये लगते है...)

(तर्ज :- आने से उनके आये बहार)

आखिर तुम्हारे ये लगते है कौन साथ तुम्हारे आयेंगे कौन
बडे नासमझ हो तुम सुनलो रे भाई ॥धृ॥

झूठ मूठ की बाते कहकर, गरीबों को तूने रे फँसाया
सारी उमर बिताकर अपनी, महलों को तुने रे बनाया
क्या आए क्या पाए इसे ना लेकरके तूम जावोगे भाई ॥१॥

अपने बच्चों के खातिर तूने धन को खुब लुटाया
सोने के गहनों से तूने अपनी औरत को सजाया
क्या तेरे है सारे, गफलत में पडोना तुम समझो ये भाई ॥२॥

जैरामदास कहता मेरा मेरा ये कहना तू छोड दे ।
माया का खेल ये सब इसमें भ्रमण लगाना छोड दे ।
जब इनसे छूटना है हरिका तू स्मरण कर, सुनले ये भाई ॥३॥

■ ■ ■

भजन क्र. १०१ (मैं तो अपनी गाडी चलाऊं...)

(तर्ज :- मै तो गिरिधर में रंग जाऊं)

मैं तो अपनी गाडी चलाऊं
यम नियमों के रेल पथ पर, गाडी को पहुचाऊं ॥टेक॥

सत्य अहिंसा ब्रम्हचर्य, और अस्तेय पालन करलूं
अपरिग्रह से पवित्र बनकर, चित्त शुद्ध कर लेऊं ॥१॥

शान्ति और संतोष मनाकर ईश्वर चिंतन कर लूं
वेद पठन की घंटी बजगई, तप जप झंडी दिखाऊं ॥२॥

आसन का जब स्टेशन आया, नाडी शुद्ध कर लेऊं
नाक पकडकर प्राणायाम को शुद्ध कराने बैठूं ॥३॥

रेचक पुरक कुंभक करके, प्रत्याहार को पहूंचूं
विषयांतर्मूख बनते बनते एक चित्त कर लेऊं ॥४॥

ध्यान धारणा स्टेशन आए, ध्यान मग्न मैं होऊं
हृदय पद्म पर मनस्थिर करके एक वृति बन जाऊं ॥५॥

अष्ट सिद्धिके आगे बढ़कर सहस्त्र दल पर पहुचूं
जैरामदास को लगे समाधि गाडी वही रूकाऊं ॥६॥

भजन क्र. १०२ (जन्म मरण से छूटना है...)

(तर्ज :- अगर ईश्वर पाना है)

जन्म मरण से छूटना है, समझले खुद को तू पहले ॥टेक॥

चमडे की गठडी है क्या तू, हाड मास का पिंजरा क्या तु
पंचतत्वो से निराला है तु, समझना इसको तू सीखले ॥१॥

कई जन्मो से तू घुमता है, कर्म देहो में घुमता है ।
चराचर में भी निराला है, समझना इसको तू सिखले ॥२॥

बतादे ज़न्म कब पाया, बतादे मृत्यु कब पायी
नित्य अविनाशी तू रे है, नही तू मरने वाला है ॥३॥

यदि तुझे काटने जावे, नही तू कटने वाला है ।
घुलाया जाय तुझे तो भी, नही तू घुलने वाला ॥४॥

सुखाया जाय तुझे तो भी, नही तू सुखने वाला है
जलाया जाय तुझे तो भी नही तू जलने वाला है ॥५॥

समझता खुद को क्यो गंदा, गंदगीसे मतलब ही क्या
सनातन निर्गुण, शुद्धात्मा, जिसे ब्रम्हास्मि कहलाते है ॥६॥

कहे जैराम सुन भाई, अहं ब्रम्हास्मि कहला दे
समझना खुदको तू चाहता, तो संतन का संग तू धरले ॥७॥

भजन क्र. १०३ (अगर तुझे प्रेम करना है...)

(तर्ज :- अगर तुझे ईश्वर पाना है)

अगर तुझे प्रेम करना है, प्रभू से प्रेम करते जा ॥टेक॥

लगाता प्रेम क्यों तन से, लगाता प्रेम क्यों धन से
ये दोनों झूठी माया है, सत्य से प्रेम करते जा ॥१॥

छोड दे प्रेम कंचन से, छोड दे प्रेम कामिनी से
इस बंधन से छुटना है तो प्रेम आत्मा से करते जा ॥२॥

भलाई देश की चाहता, भलाई विश्व की चाहता
प्रभु है सब चराचर में सभी से प्रेम करते जा ॥३॥

तेरा धर्म कुछ भी हो, न छोडो धर्म तुम अपना
भलाई धर्म की चाहता, धर्म से प्रेम करते जा ॥४॥

पूछा जब संभाजी से ये, धर्म या मृत्यु क्या होना
मृत्यु को उसने अपनाया, मृत्यु से प्रेम करते जा ॥५॥

कहे जैराम सुन भाई, प्रभु का प्रेम एक रूप है
यदि प्रभु को मिलाना है प्रभु से प्रेम करते जा ॥६॥

भजन क्र. १०४ (चली रे मेरी सुरता गगन ...)

(तर्ज :- कन्हैया तेरी मुरली बैरन भयी)

चली रे मेरी सुरता गगन को चली
पिया मिलन को बावरी ॥धृ॥

नव तारका बाजा मेरा, अनोखा नाद सुनाये
एक, एक तारकी धुन निराली, बिरलाही सुनपाये
सोवत, जागत, रूकेना पलभर सोहं उसकी बोली ॥१॥

हंसा उडे एक्कीस स्वर्ग के उपर बेगम तार पहुंचाये
अनहद की धुन कानपर आये, ढोल मजिरा सुनाये
सुधबुध सारी भुल गया मैं अजब छबी निराली ॥२॥

शब्द, शब्द से अलख जगाया, आत्मतत्वों को पाया
जो, जो पग आगे बढाया, आनंद के गीत गाया
शून्य शिखर पर हंसा जाये, ज्योत में ज्योत मिली ॥३॥

जैरामदास कहे इस पद को बिरले ने ही पाया
जो होगा इस घरका ज्ञानीं, उसने ही आजमाया
निज स्वरूप की परख सुंदर परम् पद की बोली ॥४॥

भजन क्र. १०५ (जय दुर्गे अंबेमाता...)

(तर्ज :- मेरा नाम है चमेली)

दोहा - *सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गणेश*
पांच देव रक्षा करे, ब्रम्हा विष्णु महेश

जय दुर्गे अंबेमाता, भक्तों को दे तू दिलासा
बैठा हूं लेकर के आसा, तेरे दर पे
अवतार लिये जग तारन, पृथ्वी का भार उतारण
असुरों का करने दमन, बैठी शेर पे ॥धृ॥

घुसखोरी और गुंडा गर्दी, बढ रही जहाँ तहाँ
कुचली जा रही ईमानदारी, सच्चा रो रहा मैय्या
हो ऽऽ देर ना लगा आने को तू ऽऽ
त्राही त्राही हो गई जनता
दौडके आ संकट पे ॥१॥

तेरे भोले भोले बालक, देखे जैंसे चातक
खिसक रहा है धैर्य इनका, कैसे सहे ये पातक
हो ऽऽ तू ही बता दे अब मैय्या ऽऽ
माँ बिन पुत्र कैसा जिये
जैसा हाल यहाँ पे ॥२॥

कितनी देर रही आने की, तुम बिन प्यासी अखियाँ
मनकी मुरादे पूरी कर दे, आके बढा दे बैंया
हो ऽऽ और ना तुझ से कुछ मांगू ऽऽ
सुख शांति का वरदान दे दे
चले सत् के पथ पे ॥३॥

विघ्न हरिणी नाम तुम्हारा, सबकी रक्षा कीन्ही
धर्म बचाकर असुर संहारे, ऐसी बेद बानी
हो ऽऽ जैरामदास की प्रार्थना ये ऽऽ
अन्यायों का खात्मा करके
कृपा कर तू हम पे ॥४॥

भजन क्र. १०६ (भारत की आजादी की...)

(तर्ज :- सच्चे सेवक बनेंगे हम)

भारत की आजादी की
साकार कर दिखलाऐंगे
अरे तमन्ना पूरी करके
सच्चे सपूत कहलायेंगे ॥धृ॥

लडते रहेंगे हम तब तक
जब तक रहेगा तन में प्राण
कितनी भी कठिनाई आए
चाहे हो जाए हम कुर्बान
हारेंगे न हिम्मत कभी, प्रण को निभाते जायेंगे ॥१॥

संत विचार को हृदय में धरकर
हर एक कदम बढायेंगे
राहों मे आई मुश्किल को
हल करके दिखलायेंगे
सदाचार और नम्रता की, झांकी सब में भर देंगे ॥२॥

कितना भी कठोर ही कोई
उसका हृदय बदल देंगे
सच्चाई का ज्ञान देकर
इन्सान बनाकर छोडेंगे
नीति के इस पथ पर चलकर, प्रीति उन्हे सिखायेंगे ॥३॥

छोटे न रहेंगे बुद्धि से हम
बलधारी रहे अर्जुन सम
कायर न रहे रावण जैसे
प्रीत न करे हम पर धन से
काल भी खडा हो राहों पर, हम उससे टकरा लेंगे ॥४॥

जैरामदास कहे वचन का
प्रण पूरा निभायेंगे
एक ही नारा रोमरोम में
सत्य अहिंसा बसायेंगे
एकता से ही नेक बनाकर
विजय करके दिखायेंगे ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. १०७ (सत्य छोडे झूठ पकड...)

(तर्ज :- झूठ बोले कौंवा काटे)

सत्य छोडे झूठ पकडे, ऐसे लोको से बचियो ।
ये बहकी बाते करते, इनसे प्रीत ना करियो ॥

बिन पेंदी के लोटे जैसा, इधर उधर वे लुढ़कते है ।
वक्त पडे तो दूर ही जाते, अपनी गलती छुपाते है ॥
अपना पाप छुपाकरके वे, सबसे न्यारे रहते है ।
सबसे न्यारे रहकरके वे, भोलेजन को फंसाते है ॥
लाज शरम ना तनिक है इनको, इनसे बचकर तुल चलियों ॥१॥

मीठी मीठी बाते करते, चाले इनकी न्यारी है ।
तथ्य नही जुबाँ में इनके, दिल में भरी गद्दारी है ।
सबको फँसाना धंदा इनका, कर्मो में मक्कारी है ।
कर्मों में मक्कारी इससे, फैली ये बेकारी है ।
फैल रहा व्यभिचार इनसे, ऐसी संगत से बचियो ॥२॥

फूटकी दरारे दीख रही है, इन्ही लफंगे लोगों से
समाज पतन पर जा रहा है, इनके ही पापों से ।
ईर्ष्या की लहराती लहरे, इनके ही विचारों से ।
छुआ छुत का भेद बना है, इन बेइमान दलालोसे ।
अपना उल्लू सिधा करते, इनसे टकराते रहियों ॥३॥

जैरामदास कहे वो प्यारा, सबकी भलाई जो चाहे ।
आप तरे औरो को तारे, समता सबको दर्शाये ।
कुटिल भाव ना मन में उनके एक ही देखे आत्मायें ।
प्रेम लेवे और प्रेम देवे जनता काजो हित चाहे ।
अटल सिद्धांत है जिस नरके, उनके पथपर तुम चलियो ॥४॥

■ ■ ■

भजन क्र. १०८ (कदर होती है दुनिया मे रे...)

(तर्ज :- ऊँचे भावको दिलमें रखकर)

कदर होती है दुनिया में रे
आज पैसे वालों की
कुट नीति वालों की और
गुंडा चाल बाजों की ॥धृ॥

कितनी भी मति भ्रष्ट हो, उसकाही बोलबाला है
चाहे जैसा वो करता है बाते उसकी सच होती है
गरीब चले ईमान के पथपर कदर ना उसके कामों की ॥१॥

इनके ही पापोंसे दुनियामे, हो रहा हाहाःकार
जहाँ वहाँ है युद्ध फैला, सच्चा हो गया बेजार
भडक रही आग विश्वमें, बाते करते हिंसाकी ॥२॥

छायी चिंता सबके दिलमें, अशांति सबमें भर रही
अपने पेट की फिकर सभीको, ईर्ष्या सबमें जाग रही
सद्‌भावना भूल चले रे, फिक्र पडी है पेट की ॥३॥

ऐसाही तमाशा जब चलता है, हानि होगी जीवों की
मार काट से कई नदियाँ, बह जायेगी खूनकी
उसको कोई रोक न पाये वक्त आये नाश का ॥४॥

मंडरा रही है विष की लहरे, विषमता भाव मनमें धरे
मानव आज दानव बनके, पाखंडी का काम करे
जैरामदास कहे सुन भाई सत्‌को लेकर जो चले
करे काम ईमानदारी से, नाम को अपने अमर करे
इस मार्ग के विरूद्ध चले जो, आशा न रखे जीने की ॥५॥

■ ■ ■

भजन क्र. १०९ (मानव की सेवा ही ...)

(तर्ज :- ऊँचे भाव को दिल में रखकर)

मानव की सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा कहलाती है
उसके लिये जो घिसते रहता वही आनंद पाता है

इस युग का यही है कहना
सब मिल जुट, बाँट कर खाना
धन का संग्रह पास में हो तो
दुखियों के खातिर उसे खरचना
ऐसे भाव हृदय में जिसके, सबका प्रिय बन जाता है ॥१॥

हर जीवों की सुधि रखकर
सुख दुख उनके सुनता है
जिसको जिसकी पडे जरूरत
देने की कोशिश करता है
प्रेम रखे ऐसा जो सबसे, दाता वही कहाता है ॥२॥

वक्त घडी का ज्ञान सहारा
समझता है जो पूरा पूरा
कब क्या करना है यह जाने
वैसा ही रास्ता अपनाता
उसे ही समाज सेवक कहते, वही शांति दे सकता है ॥३॥

जैरामदास कहे सुन भाई
कल करता सो आज कर
गया काल तो फिर ना आये
फिर रोने से क्या मतलब
सेवा में ही राम को पाले, वही धर्म, मानव तेरा ॥४॥

भजन क्र. ११० (स्वाभिमान से जो जीता है...)

(तर्ज :- मुल स्वभाव बदन नही सकता)

स्वाभिमान से जो जीता है
वही ईमानदार सच्चा है रे
एक एक पल अपना
कभि न व्यर्थ खोता है रे ॥धृ॥

इस जड तन की फिक्र ना उसे
प्रीत करे वो आत्मा से
नहीं डरा सकती है उसको
मौत राह में आकर के
चिंता को जिसने ठुकराया
उसका ही प्रभु से नाता है रे ॥१॥

सब जीवों से प्रेम वो करता,
कभी कपट ना दिल में धरता
ऊँच नीच को नही मानता
समता के गुण दिल में धरता
ना वो किसी से बैर करता
वह धर्म नीति को पाता है रे ॥२॥

पर दुख को अपना दुख समझे
पर सुख को आपना सुख समझे
पर नारी को माता माने
पर धन को वह पत्थर समझे
जिसका है ऐसा व्यंवहार
वही ज्ञान की है तलवार
वही प्रेम भाव निभाता है ॥३॥

कहे जैराम्म मिलना मिलाना
इस नीति को अमल में लाना
सत् पग पर धरते चलना
सरल नही है प्रण को निभाना
आसान नही भक्ति करना
लोहे के चने चबाना
बिरला ही उसे पाता है रे ॥४॥

॥ जय मानव - जय लहरी ॥

■ ■ ■